ज़िंदगी क्या है ?

गहन चिंतक - सिद्धांतज्ञ

आचार्य विनम्रसागर

कृति :

जिंदगी क्या है?

शुभाशीष :

जैनाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रवचनकार

प्रखर वक्ता आचार्य विनम्रसागर

प्रथमावृत्ति 2200 प्रति
निवाई सन् 2005

द्वितीयावृत्ति 2200 प्रति
अजमेर सन् 2007

तृतीयावृत्ति 2200 प्रति
फिरोजाबाद 2016

प्रकाशक
धर्म प्रभावना ट्रस्ट न्यास सीपुर 9828613614

प्राप्ति स्थान
सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ, भिण्ड
देवेन्द्र जैन, बड़ी बजरिया, बीना (07580-223344)
सीपुर समता तीर्थ धाम, सीपुर 9828613614

कम्प्यूटर डिजाइन एवं मुद्रक :- मुकेश जैन 94145-55103

आर्यन् एजेन्सीज्

इन्दिरा बाजार, अजमेरी गेट, जयपुर (राज.)

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

पुनः प्रकाशन हेतु ज्ञानदान राशि - 15/-रु.मात्र

पहिले इसे पढ़ें

जिंदगी को समझना उतना ही कठिन है जितना कठिन, एक आदमी के शरीर में भोजन पानी जाने के बाद उसे कौन खून में बदलता है? कौन इस शरीर को सही ढंग से संचालित करने वाला है? संसार के चक्र को कौन बदलता है? दुनियाँ के सारे व्यक्तियों के कृत्य-दुष्कृत्य का लेखा कौन रखता है? जिसने जो किया है उसका उसे न्यायानुसार कौन फल देता है?, इन घटना चक्रों को जानना है। जिंदगी का पता लगाने के लिए हमें हमेशा पते की बात पर पहुँचना होता है हर तत्त्व पर गहनता से सोचना पड़ता है।

बड़े-बड़े महर्षि एकांत में घने जंगल में जाकर सब कुछ छोड़कर अपने आपके सरोवर में डूबे तब कहीं वो जिंदगी की वास्तविकता को समझ पाये। जिंदगी का सार त्याग के बिना समझना असंभव है। जिंदगी को समझने के बाद हमें फिर कुछ भी समझने की जरूरत नहीं है। जैसे धर्म का चिंतन करने के बाद सबका चिंतन हो जाता है। धर्म से बढ़कर अन्य कोई चीज दुनियाँ में नहीं है वैसे ही जिंदगी से ऊँची (कीमती) कोई भी चीज नहीं है। जिंदगी को समझना सारे शास्त्रों का सार समझना है।

Life is short and art is long जीवन छोटा है और विद्या बहुत है, शास्त्र बहुत हैं ऐसी अवस्था में हमें कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा ज्ञान प्राप्त करना ही श्रेयस्कर है मानव को करोड़ों अरबों-खरबों वर्षों के बाद एक बार सत्कर्म के बल से मनुष्य जन्म मिलता है जैसे समुद्र में हजारों मील दूर एक व्यक्ति नाव से गिर जाए, दक्षिण दिशा में सैकड़ों मील दूर दूसरा आदमी गिर जावे, पश्चिम में तीसरा आदमी गिर जाए, पुर्व दिशा में सैकड़ों मील दूर चौथा आदमी गिर जावे, किसी संयोग से कई वर्ष बाद ये चारों एक जगह मिल जायें ये संयोग और महान पुण्य का उदय है ऐसे ही ये मनुष्य पर्याय की प्राप्ति समझना चाहिए।

दुर्लभ पर्याय को पाकर जिंदगी का सार समझना ही सच्चा ज्ञान है जीवन को समझे बिना जीवन जीना भी जिंदगी बोझ बनाना है जिंदगी का बोझ केवल सच्चे ज्ञान से ही हल्का हो सकता है और कोई उपाय नहीं है जिंदगी क्या है इस प्रवचन को संघस्थ श्रमणी आर्यिका विमलश्री व श्रमणी आर्यिका विनेहश्री माताजी ने संकलन किया है उनके लिए हमारा आशीर्वाद है उनका जीवन मंगलमय हो।

Acharya Vinamra Sagar

अगर जीवन बनाना है तो जीवन को जिओ हँसकर
यहाँ पर खिलखिलाना है तो जीवन को जिओ हँसकर
ये दुनियाँ तो बेगानी है यहाँ सब लोग रोते हैं
समझ करके ये दुनियाँ को यहाँ जीवन जिओ हँसकर

थोड़ा सा गम थोड़ी सी खुशी ज़िंदगी इसी का नाम है
हँस के कहो तो सुबह रोकर कहो तो शाम है।।

अँधेरी दुनियाँ में इक दीप जलाए रखना,
आँधी –तूफां से उस शमां को बचाए रखना।
हारकर दिल के हौसले को न कमजोर करो,
घर तो नजदीक है माहौल बनाए रखना।।

खुद को नहीं तलाशा है- खुद में नहीं तराशा है-2
आकर बने तमाशा हम- ऽऽऽ
डूब रहे हैं पल पल में - कीचड़ के इस दलदल में
जीवन पाने की हो हो अब ललक जगाओ रे ऽऽऽ
जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाये रे ऽऽऽ
होनी-अनहोनी, कब क्या घट जाये रे ऽऽऽ

यदि कोई व्यक्ति आपसे पूछे जीवन क्या है? जीवन कैसा है ? जीवन शब्द का अर्थ क्या है ? तो जीवन शब्द का अर्थ बड़ा ही व्यापक और विशाल निकलेगा।

जी = जीतना - इन्द्रियों को, इच्छाओं को और अहंकार को

व = वमन करना - कषायों का, बुराइयों का, अपने दोषों का वमन करना, निकालना।

न = नवीनता - नये-नये विचार लाना, नये कार्य करना, नये चिन्तन, नये अनुभव करना

ये तो बात हुई जीवन के अर्थ की। अब जीवन कैसा है ? हमारी जीवन शैली कैसी होनी चाहिए? तो शायद आप जवाब नहीं दे पायेंगे। जीवन कैसा है और जीवन शैली कैसी है? आप पता नहीं कहाँ कहाँ जायेंगे। व पूछेंगे आप डाक्टर से पूछेंगे, वैज्ञानिक से पूछेंगे, मनोवैज्ञानिकों के पास जायेंगे, वकीलों के पास जायेंगे, संत महात्माओं के पास जायेंगे न जाने कितने शास्त्रों का, पत्र- पत्रिकाओं का अवलोकन करेंगे। कितने लोगों से जाकर सलाह लेंगे फिर भी जवाब नहीं मिल पायेगा कि जीवन कैसा है?

जब एक व्यक्ति ने मुरझाये हुए फूल से पूछा कि तुम्हारी जिन्दगी क्या है? तो फूल ने कहा कि **जिन्दगी बेजान है, सुबह जन्म और शाम को मृत्यु यही जीवन की पहिचान है।** किसी जुआरी से पूछा कि जिन्दगी कैसी है? तो जुआरी ने कहा कि **''ये जिन्दगी है इक जुआ, कभी हार है कभी जीत है'',** किसी शराबी से पूछा तो बोला कि **''जिन्दगी एक नशा है''** जब एक गरीब दीनहीन व्यक्ति से पूछा तो बोला **''जिन्दगी एक बोझ है'',** एक रईस अमीर धनवान से पूछा तो उसने कहा ***(Life is eat drink at be marry and death at last)*** **जिन्दगी खाना पीना और मनोरंजन करना, मौज उड़ाना और अन्त में मर जाना है।** किसी वैज्ञानिक से पूछा तो उसने कहा कि **जिन्दगी अस्तित्व और प्राण का संगम है, जिन्दगी एक**

खोज है, रिसर्च है, किसी मरीज से पूछा तो मरीज ने कहा–जिन्दगी रोगों का घर है, जब डाक्टर से पूछा तो डॉक्टर ने कहा– **जिन्दगी है दूसरों के लिए जीना, मरीजों की सेवा करना, रोगी को रोग मुक्त करना।**

जब किसी संत महात्मा से पूछा कि जिन्दगी क्या है? तो संत ने कहा– **जिन्दगी एक गुलशन है, मनुष्य का जीवन है**–बाग में खिले हुए गुलाब के फूल की तरह, सरोवर में खिले कमल की तरह, प्रभु के स्मरण से सुवासित पुष्प की तरह, अन्त में परमात्मा से, भगवान महावीर, राम, हनुमान, गौतम से पूछा भगवन् ! जिन्दगी कैसी है? तो परमात्मा ने उत्तर दिया **जिन्दगी स्वयं में उतर जाने का नाम है, स्वयं को स्वयं से स्वयं में पा लेना ही जिन्दगी है।**

कहने का तात्पर्य इतना ही है जो जैसा होता है वैसा ही उसका जीवन होता है और वैसी ही उसकी दृष्टि होती है वैसा ही उसे संसार दिखाई देने लगता है वैसी ही हर वस्तु। कहा भी है –

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि हमारी दृष्टि फूल पर पड़े तो फूल और काँटों पर नजर डाले तो काँटे नजर आते हैं। हमें अपने जीवन में फूल व काँटे को नहीं देखना है। सारभूत क्या है? उसे देखना है। जो फूल और काँटो की चाह में रहते हैं उनमें ही उलझे रहते हैं वे जीवन के चरम लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते हैं वे अनंतकाल तक संसार में ही चक्कर लगाते रहते हैं। और उनका संसार बढ़ता चला जाता है। उनमें से कोई लोग ऐसे हैं जो अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल में ही जीकर चले जाते हैं। और कोई लोग ऐसे हैं जो आज पैदा हुये थोड़े दिन बाद चले जायेंगे ।

जिन्दगी का माप करना बड़ा ही कठिन है जिस प्रकार समुद्र को हाथों से तैर कर पार नहीं कर सकते, आकाश में उड़कर उसे नाप नहीं सकते, आसमान के तारों को गिन नहीं सकते उसी प्रकार जिन्दगी का माप करना कठिन है कि जिन्दगी कितनी बड़ी, छोटी या मँझली है? किसी ने प्रश्न किया कि जिन्दगी कैसी है बड़ी है, छोटी है या मझली ? प्रश्न तो बड़ा ही अच्छा है क्योंकि जिन्दगी बड़ी भी है छोटी और मझली भी है ***Life is long short and medium*** जिन्दगी तो जिन्दगी है ये न तो छोटी है, न बड़ी है और न मझली है ये तो शब्दों का घुमाव फिराव है। जिस व्यक्ति के पास सुख सुविधाएँ हैं, अमीर है, धन दौलत है, गाड़ी है, बंगला है, नौकर चाकर हैं सम्पन्न है उस व्यक्ति को सौ साल की उम्र भी कम लगती है। और वह कहता है अभी तो मुझे बहुत कुछ करना है, कुछ दिन और जी लेने दो,

कभी मरने की चाह नहीं करता। ये सब मिथ्या दृष्टि की पहिचान है। जो जरा सी अनुकूलता में भूल जाता है कि मुझे मरना भी है, इसे ज़िंदगी छोटी सी लगती है और जो गरीब है उसके पास न तो सिर छुपाने के लिए छत है, और न तन ढकने के लिए कपड़े और न ही उदराग्नि (पेट) की भूख मिटाने को भोजन है उसके लिए एक दिन की जिन्दगी भी बड़ी लगने लगती है।

एक बात याद आती है एक बार एक राजा ने अपने राजदरबार में एक प्रश्न पूछा **कि रात छोटी कब लगती है और बड़ी कब लगती है ?** राज दरबार में सभी प्रश्न के उत्तर खोजने की उधेड़-बुन में लग गये। मंत्री, उपमंत्री, वैद्य, कुलगुरु, राजगुरु, पंडित, पुरोहित सभाजन जब सभी राजा के प्रश्न का उत्तर न दे सके तभी दीन-हीन भिखारी के समान लगने वाला एक व्यक्ति आया और बोला यदि राजाज्ञा हो तो मैं प्रश्न का उत्तर बताऊँ ? राजा ने कहा यह सब बड़े - बड़े लोग तो बता नहीं सके अब तुम ही कोशिश कर लो। उसने कहा - **''जागने वाले के लिए रात बड़ी लगती है और सोने वाले के लिए रात छोटी लगती है।''** सभी प्रश्न के उत्तर को सुनकर चौंक पड़े। सभी ने एक स्वर में पूछा ऐसा कैसे ? उसने कहा जो व्यक्ति परेशानी, पीड़ा, कष्ट, चिन्ता, दु:ख में हो जो इच्छा, अपेक्षा, आकांक्षा में हो उसे रात बड़ी लगती है क्योंकि वही व्यक्ति जागता रहता है। और जो सुखी है सुख सुविधाओं से पूर्ण है किसी भी प्रकार की चिन्ताएँ, अपेक्षाएँ, इच्छाएँ नहीं हैं ऐसा व्यक्ति रात में सोता है उसे रात छोटी लगती है। अत: कहने का तात्पर्य यह है **जिसको जीवन निर्वाह के साधन उपलब्ध नहीं उसको जिन्दगी बड़ी लगती है। इसीलिए फिर कहता हूँ**

जो दु:ख, कष्ट, परेशानी में रहता है उस व्यक्ति को चन्द दिन का जीवन भी भार के समान महसूस होता है, गम ही गम दिखाई देते हैं, सभी अपने पराये दिखाई देने लगते हैं, अपना भी साथ छोड़ देते हैं, मित्र भी दगा दे देते हैं। मित्र के दगा देने से याद आता है **दो मित्र थे।** दोंनों में अटूट् प्रेम था, स्नेह था, वात्सल्य था, विश्वास था लेकिन विधि का विधान सभी के लिए एक जैसा नहीं होता, कर्मोदय से उनमें से एक मित्र तो सम्पूर्ण सम्पन्न था लेकिन दूसरे की स्थिति ठीक विपरीत थी। एक मित्र करोड़पति था, सारी सुख सुविधाएँ उसके चरणों की दासी थीं पुत्र, स्त्री, पुत्री सभी उसका

सम्मान करते थे, 5 मंजिल आलीशान मकान था, सभी सेठजी कह कर बुलाया करते थे, इसीलिए कुछ अहंकार भी था। इसके ठीक विपरीत दूसरे मित्र की पारिवारिक स्थिति दयनीय थी सुबह खाने को मिल जाए तो शाम का ठिकाना

नहीं रहता था शाम को मिल जाए तो सुबह का ठिकाना नहीं रहता था पत्नि, बच्चे परिवार के सभी लोग दुखी थे, रहने का ठिकाना भी नहीं था सड़क पर ही झोंपड़ी बनाकर गुजर–बसर करता था। उसका मित्र हमेशा उसकी मदद किया करता था। एक दिन खाने को घर में कुछ भी नहीं था बच्चे भूख से तड़प रहे थे पत्नि ने कहा–जाओ अपने मित्र से कुछ माँग लाओ। वह मित्र के पास गया मित्र ने उसे 5000 रुपये दे दिए और कहा कि अब यहाँ कुछ भी माँगने मत आना अब पैसे नहीं मिलेंगे सच ही तो है **जब बुरा वक्त आता है तो मित्र ही क्या परछाई भी अपना साथ छोड़ देती है।** वह अपनी पत्नि को पैसे थमाते हुए बोला यदि मेरा मित्र न होता तो हम सब भूखे ही मर जाते ये 5000 रुपये हैं अब इन्हीं से जीवन चलाना है। कुछ समय निकला और धीरे –धीरे पैसे समाप्त हो गये, वह फिर से अपने मित्र के पास पहुँचा और गिड़गिड़ा कर बोला बच्चे भूख से तड़फ रहे हैं कुछ सामग्री दे दो। इस बार वह अपने मित्र से मित्र की तरह नहीं एक साहूकार की तरह पेश आया और बोला कुछ भी नहीं मिलेगा चाहे भूखे मरो चाहे खा के मरो लेकिन यहाँ से जाओ जब देखो तब भिखारी की तरह भीख माँगने के लिए चले आते हो जाते हो या नहीं, वरना धक्के मार कर बाहर कर दूँ। वह वापिस रोता हुआ आया और पत्नि से कहा आज कुछ भी नहीं हो सकता। उसने कहा इससे तो मरना अच्छा ऐसी जिन्दगी से तो मरना बेहतर है कहा भी है कि– **माँगन से मरना भला, जो कष्ट और परेशानी में रहता है उसे जीवन बड़ा दिखाई देता है।** सभी उसका साथ छोड़ देते हैं। यदि कोई साथ रहता है तो वह है धर्म। इसीलिए कहा भी है कि जीवन थोड़ा है और धर्म अधिक (Life is short and religion is long.) इस थोड़े से जीवन को यदि धर्म में परिवर्तित कर दें, धर्म में लगा दें, धर्म धारण कर लें तो वही जीवन विशाल, विस्तृत, बड़ा, सुन्दर दिखाई देने लगता है, धर्म जीवन में खुश्बू बिखेर देता है, जीवन को महका देता है विकसित कर देता है, प्रभु से मिला देता है, स्वयं को स्वयं से मिला देता है, स्वयं में उतरने की कला बता देता है, चैतन्यता से साक्षात्कार करा देता है, खुद के दर्शन करा देता है। इसलिए जीवन का प्रारम्भ धर्म से होना चाहिए, सुबह उठकर परमात्मा का स्मरण करना चाहिए, परमात्मा के दरबार में जाकर उसकी पूजा, स्तुति, भक्ति करना चाहिए और उसके साथ ही संतों का समागम यानि संतों के चरणों में बैठकर उनके उपदेशों को जीवन में उतारना चाहिए।

क्योंकि **संत जुबान से नहीं जीवन से बोलते हैं उनकी हर क्रिया प्रक्रिया हमें जीवन उत्थान का संदेश देती है।** उनके उपदेशानुसार जीवन व्यतीत करने से ही जीवन सुन्दर व सलौना बन सकता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि अच्छा

सोचो अच्छा मिलेगा (No Pain No gain)

यदि हम अपने जीवन का प्रारम्भ परमात्मा के स्मरण से व सन्तों के समागम से, सन्तों के आशीर्वाद से, सन्तों के अनुग्रह से करते हैं तो सारा जीवन, सुखमय, आनन्दमय, मंगलमय बन जाएगा। **क्योंकि अच्छे का फल अच्छा होता है** और यदि हमने अपने जीवन की शुरुआत अधर्म के साथ की, पाप के साथ की, बेइमानी के साथ की, बुराई के साथ की, अहंकार के साथ की तो ध्यान रखना उसका फल भी वैसा ही होगा। क्योंकि बुरे का फल बुरा होता है। इसीलिए हमें यह स्वयं अपने विवेक से सोचना है कि जीवन को हमें किस प्रकार व्यतीत करना है क्योंकि जीवन का, जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं कब पंछी पिंजरे से उड़ जाए, कब साँसे थम जाएँ कब जीवन की शम्मा बुझ जाए, कब जिन्दगी का अन्त हो जाए। इसीलिए तो कहा है कि –

मुस्काती हर सुबह शाम में ढली होती है
जीवन के हर कदम पर मौत लिखी होती है
बढ़ा लो कदम धरम में मेरे दोस्त
साँसों की कोई गारन्टी नहीं होती है ।।

थमते ही इन साँसों के संसार बदल जायेगा
अपने परिजन बदलेंगे परिवार बदल जायेगा
छूटेंगे सपने सारे आँखों के मिच जाने पर
ये गाँव गली बदलेगी घर द्वार बदल जायेगा।

सच ही कहा है यह जीवन बुलबुले की तरह है कब फूट जाए? यह जीवन ओस की बूँद की तरह है कुछ भरोसा नहीं कब सूख जाये, यह जीवन उस पत्ते की भाँति है कब टूट जाए? कोई भरोसा नहीं, यह जीवन उस बिजली की तरह है कब चमक जाए? कोई भरोसा नहीं, हमारा जीवन उस इन्द्र धनुष की तरह है कब विलुप्त हो जाए? न जाने कब क्या हो जाए, कब जीवन लीला समाप्त हो जाए, कब शाम ढल जाए? कब जीवन रूपी फूल मुरझा जाए? तो बात चल रही थी जिन्दगी छोटी किसके लिए, बड़ी किसके लिए और मँझली किसके लिए? **जिन्दगी छोटी उनके लिए है जो जीना तो बहुत चाहते हैं लेकिन मिला थोड़ा सा समय है।**

किसी सम्यग्दृष्टि प्राणी से पूछा जाए तो कहेगा कि जिन्दगी बहुत बड़ी है, वह सोचता है अब जिन्दगी बेकार है कब यहाँ से चला जाऊँ? न रात कटती है न दिन कटता है जिन्दगी ही जिन्दगी दिखाई देती है। बस यह लगता है कब यहाँ से चला जाऊँ?

भगवान महावीर को 42 वर्ष की उम्र में केवलज्ञान की उपलब्धि हो गई थी, प्रकाश की किरणें फूट पड़ीं थीं। इसके बाद भी उन्हें 30 वर्ष और जीना पड़ा। कैसे निकाले होंगे वे 30 वर्ष ? यही सोचते होंगे जल्दी से जल्दी यह समय निकल जाए। क्यों यहाँ अटके हुए हैं। न खाना, न पीना, न सोना, न रहना, न कुछ करना फिर क्यों फँसे हुए हैं पता नहीं ? उन्हें वे 30 वर्ष कितने बड़े लगे होंगे ? पूरा अर्द्ध पुद्‌गल परावर्तन काल निकाल दिया, पूरा चौथा काल निकाल दिया वह उतना बड़ा नहीं लगा होगा जितने 30 वर्ष लगे होंगे। इसी प्रकार महान आत्माओं को चाहे वह राम हों, आदिनाथ हों, ब्रह्मा हों, विष्णु हों, कृष्ण हों, बुद्ध हों या शंकर हों इन सभी को जिन्दगी अवश्य बड़ी लगी होगी। लेकिन आज के लोगों से पूछा जाय तो कहेंगे कि अभी तो 70 साल के हुए हैं 30 वर्ष और मिल जाते तो अच्छा होता उनके लिए जिन्दगी छोटी है।

ज़िंदगी मँझली उनके लिए है जो थोड़ा मन्दिर चले जाते हैं, पूजा पाठ कर लेते हैं, भगवान का स्मरण कर लेते हैं, साधु संतों के पास कुछ समय बिता लेते हैं, धार्मिक अनुष्ठान कर लेते हैं, कभी कभार शास्त्र स्वाध्याय कर लेते हैं और पारिवारिक कार्य कर लेते हैं, व्यापार कर लेते हैं, कुछ समय पत्नि और बच्चों के साथ बिता लेते हैं, कुछ पैसा कमा लेते हैं, कुछ दान कर लेते हैं, ऐशोआराम का सामान भी जुटा लेते हैं, तो उनके लिए जिन्दगी मँझली है। जो धर्म और कर्म दोनों कर लेते हैं उनके लिए जिन्दगी मँझली होती है। उन्हें न जिन्दगी हल्की लगती है न भारी उन्हें तो बीच की लगती है। वे कहते हैं जिन्दगी ठीक-ठाक है।

अब हमें जिन्दगी को भी समझना है क्योंकि जीवन का कोई माप नहीं, परिमाण नहीं, जीवन का कोई समय नहीं। मैं चाहूँ तो जीवन को छोटा कर दूँ, मैं चाहूँ तो जीवन को बडा़ कर दूँ, मैं चाहूँ तो जीवन को दुखों से भर दूँ, जीवन को छोटा करने पर हमारी जिन्दगी अनन्त उम्र वाली हो जाती है। जिस दिन इच्छाएँ, अपेक्षाएँ, आवश्यकताएँ कम हो जायेंगी समाप्त हो जायेंगी उसी दिन मुझे जो उम्र मिलेगी उस उम्र में सारी दुनियाँ निकल जाएगी अर्द्ध पुद्‌गल परावर्तन काल, पंचम काल निकल जायेगा लेकिन मेरी उम्र समाप्त नहीं होगी । जिसने इच्छाओं को समाप्त किया है, इच्छाओं को जीत लिया है विजय प्राप्त कर ली है उसी को अधिक उम्र मिली है। सबसे अधिक उम्र वाला यदि कोई जीव है तो वह सर्वार्थ सिद्धि का देव है। जिसकी उम्र 33 सागर की है। उसने अपनी इच्छाओं को कम किया था, उनका निरोध

किया था इसलिए 33 सागर की उम्र वाला हुआ।

कहने का तात्पर्य यही है कि उम्र, जीवन, जिन्दगी आदमी की इच्छाओं पर निर्भर है। यदि हमने अधिक इच्छाएँ कीं तो हमारी उम्र कम हो जाएगी। जैसे– किसी व्यक्ति की उम्र 60–70 वर्ष की है और इच्छाएँ अधिक करता है तो उसकी उम्र कल यानि आने वाले जीवन में कम हो जायेगी परसों और कम हो जायेगी अन्त में कम होते–होते 2–3 दिन की आयु शेष बचेगी। एक मक्खी ज्यादा से ज्यादा जी सकती है तो 6 माह तक, इससे अधिक नहीं। चाहे व स्वस्थ हो तंदरुस्त हो लेकिन 6 महिने में निपट ही जाना है, एक चींटी ज्यादा से ज्यादा 49 दिन तक ही जिएगी 50 वे दिन लुढ़क जाना है, एक शंख 12 वर्ष तक जी सकता है इससे अधिक नहीं और एक आदमी अभी इस पंचमकाल में अधिक से अधिक जिएगा तो 120 वर्ष इससे अधिक नहीं। कितनी ही कोशिश कर लें मगर यमराज आएगा और ले जाएगा –

एक व्यक्ति संत के पास पहुँचा, संत को नमस्कार किया, संत ने तथास्तु कह आशीर्वाद दिया, संत से कहा मुझे मार्गदर्शन दीजिए, संत ने कहा तुम क्या काम करते हो? उसने कहा मैं कलाकारी, शिल्पकारी, चित्रकारी करता हूँ ऐसी शिल्पकारी कलाकारी करता हूँ कि जो भी देखता है आश्चर्य करता है कि जीवित चित्र है या मुर्दा उसने कहा मैं इसी से अपने परिवार का पालन पोषण करता हूँ मैं संतुष्ट हूँ मैंने अपने जीवन में यही काम किया है संत ने कहा–बेटा, अब कुछ समय के लिए इन सबसे निर्वृत्त हो जाओ परमात्मा व गुरु के प्रति आसक्त हो जाओ क्योंकि तुम कुछ दिन के ही मेहमान हो, तुम्हारा जीवन थोड़ा सा रह गया है संत ने कहा अमुक दिन इतने बजे तुम्हारी मृत्यु होगी, मृत्यु का नाम सुनते ही चौंक पड़ा अपने आप से घबरा गया क्योंकि मरना कोई नहीं चाहता उसने साधु से कहा–तुम कैसे साधु हो? अभी मैंने किया ही क्या है और तुम कहते हो तुम्हारी मृत्यु निकट है अभी तो मुझे बहुत जीना है मेरी इच्छा है कि मै खूब धन कमाऊँ जिससे बच्चों को पढ़ा लिखाकर योग्य डॉ, वकील, कलेक्टर बनाऊँ पत्नी की इच्छाओं को पूरा कर सकूँ, माँ–पिता बच्चों का व परिवार का क्या होगा? नहीं– नहीं, अभी मैं नहीं मर सकता संत ने कहा–जाओ जिस दिन का समय

जो निश्चित है, पूर्ण तैयारी से रहना क्योंकि उस दिन तुम्हारी मौत निश्चित है। घर पहुँचा, चिन्तित दुःखी परेशान था सोच रहा था क्या किया जाये कि साधु की बात असत्य हो जाये जिससे मेरी मृत्यु टल जाये अचानक एक विचार आया कलाकारी, चित्रकारी में निपुण था, उसने अपनी ही शक्ल की 7 मूर्तियाँ

बनायीं। ऐसी मूर्तियाँ बनायीं कि देखने वाले समझ न सके असली कौन सी व नकली कौन सी है, दिन व समय के अनुसार वह तैयारी में था, 7 मूर्तियाँ खड़ी कर दीं और स्वयं बीचों-बीच खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद जो समय साधु ने बताया था उसके अनुसार यमराज आया। यमराज ने देखा तो देखता ही रह गया ये क्या नजारा है? बिल्कुल एक से आठ चेहरे, यमराज समझ न सका, यमराज ने सोचा आज तक ऐसा व्यक्ति नहीं मिला। ये इतना चतुर व्यक्ति कौन है। आज तक ऐसा नहीं हुआ कि मैं आया और खाली हाथ वापिस लौटना पड़ा। आखिर में यमराज को हताश होकर वापिस जाना पड़ा। यमराज विष्णु जी के पास गये। विष्णु जी को सारी घटना सुनायी। विष्णुजी यमराज के साथ गये, वहाँ देखकर विष्णु जी भी दंग रह गये। इनमें से असली कौन, नकली कौन का पता नहीं लगा पा रहे थे। वह भी समझ न सके । दोंनों ब्रह्मा जी के पास पहुँचे, ब्रह्मा जी को सारी बात बताई ब्रह्मा जी ने कहा - ऐसा कैसे हो सकता है? आज तक ऐसा नहीं हुआ ब्रह्माजी भी साथ गए, तीनों वहाँ पहुँचे तो, ब्रह्माजी भी देखकर आश्चर्यचकित हो देखते रहे, बोले कि एक सी शक्ल, न हिल रहे, न डुल रहे, न कोई क्रिया समझ में नहीं आ रहा, इनमें से असली कौन है। थोड़ी देर बाद ब्रह्माजी को एक विचार आया, यदि आदमी की प्रशंसा मुँह पर करो तो आदमी स्वयं अपनी प्रशंसा सुनने के लिये सामने आ जाता है ब्रह्माजी ने कहा- **ऐसा कौनसा व्यक्ति है जिसने ये एक सी शक्ल की इतनी सुन्दर मूतियाँ बनाई।** वास्तव में जिसने भी ये मूर्तियाँ बनायी हैं, वह इनाम पाने का हकदार है। यदि यह व्यक्ति मेरे सामने आ जाये तो मुँहमाँगा इनाम दिया जायेगा। वह अपनी प्रशंसा को पचा नहीं सका, बीच में से निकलकर बोला- हमने ये मूर्तियाँ बनाई हैं। जैसे ही ब्रह्मा जी ने देखा और यमराज ने दबोचकर पकड़ लिया कान पकड़कर खींचते हुए यमराज ने कहा-चल तेरा अन्त समय आ गया। यमराज उसकी अन्तिम साँसों को लेकर चला गया।

इसलिए जितना हो सके अपनी इच्छाओं को कम करने का प्रयास करें। एक व्रती एक साधु अपनी इच्छाओं को कम करता हुआ देव गति को प्राप्त कर लेता है जिसकी उम्र कई सागर पर्यन्त होती है काल के काल निकल जाते हैं पर आयु समाप्त नहीं होती है।

किसी ने प्रश्न किया कि अधिक इच्छाएँ करने वाला, अधिक परिग्रह रखने वाला, अधिक पाप करने वाला, क्रूर परिणामों वाला, नरक गति में अधिक आयु को प्राप्त कर लेता है - जैसा कि तत्वार्थ सूत्र में आचार्यवर उमास्वामी जी कहते हैं, "बह्वारंभ परिग्रहत्वं नारकस्यायुषः" अति आरंभ परिग्रह से नरकायु का बन्ध होता है। जहाँ 33 सागर की आयु होती है तो नरक

अच्छा या स्वर्ग ? उम्र तो दोनों जगह मिलती है मगर दोनों में अन्तर है। स्वर्ग में उम्र के साथ सुख मिलता है और नरक में उम्र के साथ दु:ख। इच्छाओं को कम करने से उम्र के साथ सुख मिलता है और इच्छाओं को बढ़ाने से, परिग्रह जोड़ने से उम्र के साथ दु:ख मिलता है,यही दोनों में अन्तर है। उम्र दोनों के पास है, जिन्दगी दोनों को जीना है। यदि इच्छाओं को ज्यादा करके जियेंगे तब भी किस्मत के अनुसार ही मिलेगा, ज्यादा नहीं और इच्छाओं को कम करके जिया है तब भी उतना ही मिलेगा जितना तुमने किया है। करने से ज्यादा कोई ले नहीं सकता और यदि ज्यादा ले भी लेगा तो कहीं न कहीं किसी न किसी क्षेत्र में नष्ट हो जायेगा, व्यय हो जायेगा। क्योंकि जितना किया नहीं था, उससे अधिक मिला इसलिए व्यर्थ चला गया। इसलिए कहा भी है कि –

वंदा लाख चाहे तो क्या होता है, ?
वही होता है तो किस्मत में लिखा होता है।।

यदि इच्छाएँ अधिक की हैं तो उसी के अनुसार फल भोगना पड़ता है। अच्छी बुरी करनी का फल मनुष्य को पुण्य पाप के रूप में ही मिलता है। क्योंकि

कर्म जो करे जैसा फल भी वैसा पाता है,
शुभ करम हँसाता है पाप दुख लाता है।

यदि बुरे कर्म किये तो पाप का बंध होगा, और अच्छे कर्म किये, दान, पूजा स्वाध्याय आदि की तो पुण्य का बंध होगा लेकिन पुण्य के उदय में आदमी धर्म कर्म सब भूल जाता है एक जरा सी नौकरी क्या मिल गई 10–12 हजार की तो अपने आप में शहंशाह समझने लगे। सारा जीवन उसी में गुजार दिया, उसी में रम गये, उसी को अपना मान लिया, उसी को सुख मानने लगे। अब पाँव तो जमीन पर टिकते ही नहीं आसमान से बातें करने लगे। उस जरा से मकान में, दुकान में, पैसों में अपनी पूरी जिन्दगी बर्बाद कर दी अरे तुम्हारी जिन्दगी तो दो कोड़ी की भी नहीं है। यदि तुमने जीवन को उद्देश्य नहीं बनाया, जीवन को समझने का लक्ष्य नहीं बनाया, जीवन में

सत्य की किरण प्रस्फुटित नहीं हुई, जीवन को जीवन नहीं समझा तो तुम्हारी जिन्दगी दो कोड़ी की भी नहीं है। तुम्हारी जिन्दगी जिंदा लाश के समान है।

एक व्यक्ति से पूछा कि तुम्हारी जिंदगी कितने पैसों की है ? तो बोला दो कोड़ी की भी नहीं मेरी जिंदगी तो इस पृथ्वी पर बोझ के समान है। दूसरे व्यक्ति से पूछा तुम्हारी जिंदगी कितने पैसों की है ? उसने कहा दस पैसे

की दस पैसे कमा लेता हूँ और खा–पीकर सो जाता हूँ बस यही मेरी जिंदगी है। तीसरे व्यक्ति से पूछा कि तुम्हारी जिंदगी कितने पैसों की है ? तो उसने कहा सौ रुपये की, दिनभर मेहनत करता हूँ शाम को सौ रुपये कमाकर लाता हूँ, पत्नि बच्चों के साथ बैठकर भोजन करता हूँ, और सो जाता हूँ यही मेरी जिंदगी है। आगे कई व्यक्तियों से पूछा किसी ने हजार, किसी ने दस हजार, लाख, करोड़, अरब आदि – 2 बताई किसी का भी उत्तर उचित नहीं था। तभी एक व्यक्ति उठा और बोला कि मेरी जिन्दगी सबसे अधिक कीमती है जो करोड़ों अरबों रुपयों में भी नहीं खरीदी जा सकती है। उससे फिर पूछा कैसे ? तो बोला कि हम अपने शरीर के अंगों का उपयोग सही जगह करें तो हमारी जिंदगी रुपये पैसों से नहीं आँकी जा सकती।

जिन्दगी की कीमत

एक बार की बात है एक व्यक्ति बेरोजगार था धन कमाने के अभाव में भूख से मरने की नौबत आ गई सोचने लगा कि कहाँ मरूँ, कुए में कूदकर मरूँ, ट्रेन के नीचे कटकर मरूँ, सैल्फास खाकर मरूँ, नदी में डूबकर मरूँ, बस के नीचे आकर मरूँ या मानव बम बनकर मरूँ। यद्यपि मरने के कई तरीके अपना सकते हैं लेकिन जीने के ढंग कई नहीं हैं एक ही है जब तक जिंदगी के सच को अनुभूत नहीं किया जायेगा तब तक जीने का हर ढंग गलत ही होगा।

कई बार मरने के ढंग पर सोचते – सोचते उस व्यक्ति को पहाड़ से गिरकर मरना अच्छा लगा सोचा एक झटके में मर जायेंगे, न दर्द होगा, न अस्पताल जाकर कराहना पड़ेगा ऐसा सोचकर वह एक ऊँचे हिमालय से पहाड़ पर चढ़ गया पूर्व से उस पर्वत पर एक व्यक्ति पहले से ही चढ़ा हुआ था जब वह पहाड़ की चोटी पर पहुँच गया तब नीचे देखा तो होश उड़ गये। घर पर कभी चार सीढ़ी से नहीं कूदा अब 4 हजार सीढ़ी वाले पहाड़ से कैसे कूदता, हिम्मत भी तो जरूरी थी और पाने में तो आदमी हिम्मत कर भी लेता है लेकिन मरने में हिम्मत करने से क्या फायदा है? होश उड़ने पर भी उसने काफी देर बाद कूदने की हिम्मत जुटाई और कूदने को डग बढ़ाया ही था कि तभी पीछे से वह आदमी, जो पूर्व से पहाड़ पर था, उसने हाथ पकड़ लिया और बोला क्या करना चाहते हो ? वह बोला मरना चाहता हूँ, उसने पूछा क्यों मरना चाहते हो ? उसने कहा मैं जिन्दगी से ऊब चुका हूँ अब जिन्दगी जीना मेरे बस की बात नहीं है, बेरोजगार हूँ, मेरे पास कुछ भी नहीं है ऐसे जीने से तो मरना भला । उस व्यक्ति ने उससे कहा तुम कहते हो मुझ पर कुछ नहीं है, हम कहते

हैं तेरे पास लाखों करोड़ों, अरबों की सम्पदा है, वह मरने वाला व्यक्ति उसकी ओर विस्मयता से देखने लगा और सोचने लगा कहीं यह पागल तो नहीं है।

तभी पीछे से वह आदमी, जो पूर्व से पहाड़ पर था, उसने हाथ पकड़ लिया और बोला क्या करना चाहते हो ? वह बोला मरना चाहता हूँ, उसने पूछा क्यों मरना चाहते हो ? उसने कहा मैं जिन्दगी से ऊब चुका हूँ अब जिन्दगी जीना मेरे बस की बात नहीं है, बेरोजगार हूँ, मेरे पास कुछ भी नहीं है ऐसे जीने से तो मरना भला । उस व्यक्ति ने उससे कहा तुम कहते हो मुझ पर कुछ नहीं है, हम कहते हैं तेरे पास लाखों करोड़ों, अरबों की सम्पदा है, वह मरने वाला व्यक्ति उसकी ओर विस्मयता से देखने लगा और सोचने लगा कहीं यह पागल तो नहीं है।

सही बात है कि **जो खुद पागल हो उसे सारी दुनियाँ पागल ही नज़र आती है रागी को विराग और वीतराग में भी राग नजी आता है विरागी को राग में भी विराग नजर आता है।** हमारी नजर पर ही सारे दृश्यों का नजारा बनता है हमारी नजर ही हमारी राह बनाती है रास्ते पर चार लाइनें

हमारी आँख का पानी हमें रस्ता दिखाता है
न हो गर आँख में पानी वो रस्ता भूल जाता है।
हो दिल में जख्म, फोले पाँव में, पर हो हँसी लब पे,
उसी के दिल में आकर के खुदा दर्शन दिखाता है।

विस्मय से उसने उसकी तरफ देखा और उसके कंधे पर सहानुभूति भरा हाथ रखा और कहा कि चलो नीचे बताएँगे कि तेरे पास कितनी सम्पत्ति है उसने कहा नीचे क्यों ? बताना है तो यहीं बता दे गर नीचे तूने नहीं बताई तो मुझे फिर ऊपर चढ़कर आना पड़ेगा। उसने कहा–कि हर बात हर जगह नहीं समझाई जाती, पिक्चर में कभी शास्त्रों की बातें नहीं बताई जाती, वीतरागी संतो के पास राग की तान नहीं निकलती, शास्त्रों के स्थान पर पिक्चर की बातें नहीं बताई जाती वैसे ही नीचे ही तुझे तेरी जिन्दगी की असली कीमत बताऊँगा।

वह उसे हाथ पकड़कर नीचे लाया और एक सेठ की दुकान पर खड़ा कर दिया। सेठ एक व्यक्ति से कह रहा था कि तू अपनी आँख बेच दे कितने में देगा ?वह कह रहा था दस लाख में दे दे पर वह नहीं दे रहा था उसने बीस लाख में दोंनों आँखें माँगी, नहीं दी, तभी एक दूसरा सेठ आया उसने कहा हमें किडनी की जरूरत है तू यदि अपनी किडनी बेचना चाहे तो मैं 5 लाख रुपये देने को तैयार हूँ वह किडनी देने को तैयार नहीं था तभी एक और दृश्य देखा कि तीसरा एक और सेठ आया हार्ट पेशेन्ट था उसने उस व्यक्ति

का हार्ट 10 करोड़ में माँगा तब भी वह नहीं दे रहा था।

यह दृश्य वह देख रहा था जो पहाड़ पर मरने के लिये गया था उसने यह सब देखकर सोचा कि दोंनों आँखें बीस लाख की किडनी 5 लाख की, और हृदय दस करोड़ रुपये का अभी तो हाथ पाँव और सबसे कीमती तो यह मस्तिष्क है जब शरीर के तीन अंशों की इतनी कीमत है तो पूरे शरीर की कितनी कीमत होगी ? वह खड़ा खड़ा किंकर्तव्य विमूढ सा पाषाणवत् हो गया और भागता हुआ चिल्लाया, कि मैं तो करोड़पति हूँ मैं तो बहुत अमीर हूँ तभी एक घटना और घटी एक राज्य ने दूसरे देश के राज्य पर आक्रमण करने की ठान ली और घोषणा करवा दी कि जो व्यक्ति उस राजा को मानव बम बनकर मार देगा हम उसे उसी देश का राजा बना देंगे। उसके कानों में यह बात पड़ी तो उछल पड़ा और बोला ये काम मैं कर दूँ तो राजा बन जाऊँगा फिर चारों तरफ मेरा ही राज्य होगा। वह व्यक्ति जिसने पहाड़ से कूदने पर उसे बचाया था, हँसा और बोला कि तुम कहते थे मेरे पास कुछ नहीं है और अब कह रहे हो कि मैं राजा हो सकता हूँ जरा सोच, तू मानव बम बन जाएगा तो तू मर जायेगा फिर राजा कौन बनेगा ?

यह सुनकर वह फिर दुखी होने लगा तभी एक वीतरागी संत रास्ते से गुजर रहे थे उन्हें देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, प्रसन्नमुद्रा, निस्पृह, वीतरागी जो राजा नहीं राजाओं के राजा, महाराजा थे। उन्हें देखकर उसे जीवन का परमोत्कृष्ट मार्ग नजर आने लगा उनके चरणों में बड़े - 2 राजा लोग रत्नों को अर्पित कर रहे थे और वे संत उस पर नजर भी नहीं डाल रहे थे यह देखकर उसने जिन्दगी पर नजर डालते हुए कहा कि हमारी जिन्दगी की कोई कीमत नहीं, गर कोई कीमत से जिन्दगी की कीमत आँकता है तो वह तुच्छ मानव है आज पता चला कि जिन्दगी अमूल्य है इसे जरा से मूल्य के मकान - दुकान व वस्तुओं में गँवाना हमारी महान बुद्धिहीनता का परिचय है कीमत पर चार लाईन -

बिना मज़हब के मानव की जमाने में है क्या कीमत ?
बिना कौड़ी के श्रावक की जमाने में है क्या कीमत ?
है जीवन में यहाँ संयम नियम भगवान की भक्ति
नहीं जिसके ये जीवन में है उसकी क्या यहाँ कीमत ?

उसने कहा यदि इन आँखों से परमात्मा को देखें, साधु को देखें, गुणों को देखें, धर्मी को देखें तो हमारा जीवन मधुवन बन जाता है। इन कानों से जिनवाणी को सुनें साधु के वचन, धर्म की बात, जिनवाणी की बात, अच्छी

अच्छी बात सुनें तो हमारा जीवन उज्ज्वल बन जाता है। यदि मुख से मीठे वचन बोलें, धर्म के वचन बोलें, भगवान का गुणगान करें तो हमारा जीवन विकसित हो जाता है। इन हाथों से अच्छा – अच्छा लिखा जाये धर्म आगम व गुरु की बात लिखी जाये तो हमारा जीवन सुन्दर बन जाता है। इन पैरों से मन्दिर के लिये जायें, परमात्मा के द्वार पर जायें, संतों के दरबार में जायें, तीर्थ पर जायें तो ये जीवन दीपक की तरह प्रकाशित सुन्दर व शुभ हो जाता है। इसके विपरीत यदि इन अंगों का उपयोग गलत जगह किया, खोटी बातें, निन्दा करने में, चोरी करने, मधुशाला जाने, जुआ खेलने, गाली सुनने, शराब पीने, खेलने कूदने में, टी.वी. देखने में, उपन्यास आदि पढ़ने में यदि इन अंगों का उपयोग किया तो जीवन बेकार हो जायेगा, जीवन दो कोड़ी का भी नहीं रहेगा जीवन बिखर जायेगा, बर्बाद हो जायेगा, जीवन बदबू से भर जायेगा, जीवन, दु:खमय व कष्टमय हो जायेगा इसीलिए कहा – जीवन को सही जगह सही तरीके से समझें तो जीवन काम का है, करोड़ों, अरबों रुपयों से भी अधिक है और यदि जीवन को नहीं समझा, जीवन शैली को नहीं समझा तो दो कोड़ी का भी नहीं है इसीलिये कहा गया है – जीवन की सर्वोच्च व सही विद्या है **न्यूनतम लेना, अधिकतम देना, श्रेष्ठतम जीना** यही जीवन की सर्वोच्च व सही विधा है कम लो, दूना दो। कहा है –

गरीबों की सुनो वो तुम्हारी सुनेगा।
तुम एक पैसा दोगे वो दस लाख देगा

Hear the poor, God will hear you.
You will give one paise God will give ten million.

यदि तुम एक पैसा दान दोगे, तो परमात्मा उसका दस लाख वापिस देगा, यदि तुम भूखे को भोजन कराओगे तो रुपये पैसों से मालामाल रहोगे, यदि किसी गरीब के बेटे को पढ़ाया तो अधिकतम ज्ञान होगा, यदि जीवों पर दया करुणा रखोगे तो हमेशा सुख शान्ति महसूस करोगे।

यदि एक पैसा देने पर दस लाख मिलता है तो कौन ऐसा नहीं होगा जो गरीब को जल्दी से दान नहीं देगा। लिखा हुआ गलत कहीं भी नहीं है लकिन हमें गरीब की परिभाषा समझना कठिन है सर्व प्रथम एक पैसा देने के भाव के साथ दुनियाँ का सबसे गरीब व्यक्ति चाहिए यद्यपि परमात्मा के दरबार में कोइ करोड़पति अरबपति सेठ पूजन करता है तो परमात्मा से यही कहता है कि –

वह इतना बड़ा सेठ भी गरीब है, सेठ की नजर में नौकर भी गरीब है, नौकर की नजर में बेरोजगार भी गरीब है, बेरोजगार की नजर में भीख माँगने वाला भी गरीब है, भीख माँगने वाले की नजर में वह गरीब है जिसके पास कुछ नहीं है एक कटोरा है तन पर छोटी सी लंगोटी है और एक छोटा सा चादर है फिर भी कुछ खाने को नहीं माँग सकता और ऐसे क्षुल्लकों के सामने वह मुनि गरीब है जिसके पास तन के लिए एक लंगोट भी नहीं है हाथ में भीख माँगने को कटोरा भी नहीं यदि मुनि को खिलाये, वह भी तरीके से तो अपने पुण्य की सराहना करते हुए खा लेता है और यदि कोई नहीं खिलाये यें तो भगवान का भजन करते हुए ईश्वर को शुक्रिया अदा करता है कि हे भगवान! आज तूने हमें जीवन में साधना का अवसर दिया

ये वास्तविक संत हैं ऐसे निर्ग्रन्थ संतों को **जो भोजन खिलाकर खाता है वह व्यक्ति हमेशा खिलखिलाता है लेकिन जो खुद खाकर संतो को नहीं खिलाता है वह जीवन भर बिलबिलाता है, तिलमिलाता है।**

ऐसे निर्ग्रंथ संतो को सभी अपने घर पर बुलाना चाहते हैं। ये चलते-फिरते तीर्थ और भगवान हैं। लेकिन ऐसे संत किसी के दर पर केवल भोजन के अर्थ या किसी जीव के उद्धार के अर्थ जाते हैं और कभी नहीं जाते हैं। ऐसे संतो में एक ऋद्धिधारी संत होते हैं जो अपरिचित जगहों पर जाकर आहार लेते हैं ये और उच्च गरीबी में आते हैं, इनसे भी गरीब वे हैं जिन्हें सबसे बड़ा तीर्थंकर पद मिला जहाँ घर में 63 अरब रत्नों की वर्षात हुई। दुख क्या होता है? इसे जीवन में जाना ही नहीं, ऐसे राज्य को पाकर जो जंगल में रह रहे हों तन पर एक धागा भी न हो अपनी आत्म साधना में लीन हो, सारी दुनियाँ को जानते हुए भी चुपचाप बैठे हों ऐसे तीर्थंकर से गरीब व्यक्ति ढूँढना मुश्किल है सबसे गरीब कोई है तो मेरी नजर में तीर्थंकर ही हैं उनके हाथ में पैसा रख नहीं सकते क्योंकि जिसने सारे वैभव को समझकर त्याग से ठोकर मार दी हो वे तुम्हारे एक पैसे को चूमेंगे या चाटेंगे।

ऐसे निर्ग्रंथ तीर्थंकर के हाथ में यदि हम एक पैसे से एक ग्रास खरीदकर भक्ति पूर्वक रख देते हैं तो यह एक पैसे का फल दस लाख रुपये में बदल जायेगा यह बात परम सत्य है लेकिन जो गरीब पेट के लिए तुम्हारी दुकान या घर पर तुमसे भीख माँग रहा है उसे एक पैसा देने पर हजार रुपये का फल भी नहीं हो सकता। पेट पापी है और परमात्मा पुण्यात्मा है जब हम पेट के लिए दान देते हैं तो फल अल्प है और जब किसी महान संत को परमात्म पद पाने हेतु साधना के लिए एक पैसा देते हैं तो वह एक पैसा ही कई लाख रुपयों में परिवर्तित होकर हमारे पास आता है।

जिन्दगी बेच दो

एक बार की बात है एक जंगल में एक व्यापारी रास्ता पार कर रहा था तभी धूप तेज होने के कारण वह एक पेड़ के नीचे आराम करने लगा। पेड़ पर दो पक्षी बैठे – बैठे बातें कर रहे थे कि इस वर्ष सरसों में मंदी आयेगी। वह व्यापारी पक्षियों की भाषा समझता था। उसने जब यह सुना तो बहुत चिन्तित रहने लगा, क्योंकि उसके पास सरसों के दस हजार बोरे भरे हुए थे। उसने एक दिगम्बर संत से पूछा ऐसी अवस्था में हमें क्या करना चाहिए ? संत ने कहा–कि सरसों जल्द से जल्द बेच दी जाये उसने घर आकर सारी सरसों बेच दी। 15 दिन के बाद सरसों के भाव एक चौथाई कम हो गये।

वह व्यापारी सोचने लगा कि पक्षी भी संत की तरह बिल्कुल सत्य बोलते हैं। एक बार आदमी गलत बोल सकता है लेकिन पक्षी नहीं जानवर नहीं। झूठ बोलने की प्रक्रिया इस मानव में ही दिखाई देती है लगभग देवगति के देव भी सत्य ही बोलते हैं।

ऐसा सोचकर वह व्यापारी दूसरे दिन अपने अन्य कार्य में लग गया। कई दिन बाद एक बार फिर वही वृक्ष के नीचे वह आराम कर रहा था कि अचानक वे पक्षी बोले इस वर्ष सोने में तेजी आयेगी उसने जैसे ही सुना वह संत के पास नहीं गया सीधा बाजार गया उसने करोड़ो रुपयों का स्वर्ण खरीदकर रख लिया एक माह बाद स्वर्ण की कीमत बाजार में एक चौथाई बढ़ गई उसे लाखों रुपयों का लाभ हुआ अब वह उस पेड़ के नीचे बैठने रोज जाने लगा लेकिन पक्षी रोज रोज ऐसी बातें नहीं करते थे।

एक माह बाद फिर पक्षी बात कर रहे थे कि चने में मंदी आयेगी उसने तत्काल आते ही गोदाम का सारा चना बेच दिया पन्द्रह दिन बाद चना सस्ता हुआ वह घाटे से बच गया। पक्षियों की भाषा समझने से उसे बहुत फायदा हुआ सही बात यह है कि **''सत्य वही बोल सकता है जिसे किसी से कुछ लेना देना नहीं है।''** पक्षियों को व्यापार से कुछ लेना देना नहीं था।

एक दिन की बात है कि वह व्यापारी पेड़ के नीचे आराम कर रहा था कि तभी वे पक्षी आपस में बातें कर रहे थे कि **ये जिन्दगी बहुत ही कमजोर है, चंद दिनों की है, न मालूम कब समाप्त हो जाये।** इसका पता नहीं है। एक आदमी कई दिन क्या कई पीढ़ियों तक इंतजाम कर लेता है लेकिन पल का भी भरोसा नहीं होता। आज ठीक ठाक चल रहे हैं कल का पता नहीं है।

जीवन जलता दिया यहाँ – कब बुझ जाये रे – ऽऽऽ

होनी अनहोनी हो – 2 कब क्या घट जाये रे – ऽऽऽ

चंद दिनों का जीवन है – इसमें देखो सुख कम है

गम ही गम नजराता है – 2 ऽऽऽ

जन्म सभी को है मालूम – मृत्यु किसी को नहिं मालूम

जाने कब पंछी – हो – 2 तन से उड़ जाये रे – ऽऽऽ

जब व्यापारी ने ये सुना तो घबरा गया उसने सोचा व्यापारादि के बारे में हम सब जानते हैं लेकिन जिन्दगी का पता किससे पूँछे ? कहाँ जायें ? तीन दिन तक उसे नींद नहीं आई भोजन पत्नी बच्चे सब बेकार हो गये, महल जैसा मकान सभी सुख सुविधायें फिजूल नजर आने लगीं और अन्दर अन्दर ही उसकी चिंता बढ़ती चली गई तभी उसे वह संत याद आया जो सबसे पहली बात का जवाब देने वाला था उसके चेहरे पर एक खुशी की लहर छाने लगी क्योंकि उसे विश्वास था कि **दिगम्बर संतों के पास अथाह ज्ञान होता है वे हर प्रश्न का उत्तर देने में सक्षम होते हैं।** उनके समान इस पृथ्वी पर किसी को भी ज्ञान नहीं होता।

प्रात: हुआ वह स्वच्छ वस्त्र पहिनकर उनकी खोज में निकल पड़ा बहुत देर तक मशक्कत करने के बाद, कई लोगों से पूछने के बाद उन मुनिराज का पता लगा वह वहाँ पर पहुँचा और महात्मा से समय मिलने पर पूछा कि मैंने सुना है जिन्दगी बहुत कमजोर होती जा रही है, नष्ट होगी, इसके बचाव का कोई उपाय बताइये जिससे हमें फायदा हो।

महात्मा जी ने सहजता में उत्तर दिया कि एक ही उपाय है इसे बेच डालो। व्यापारी सकते में आ गया बोला इसे कैसे किस भाव में बेच सकते हैं? मुनिराज हँसे और बोले इसे **किसी संत के चरणों में अर्पित करके सब कुछ छोड़कर दिगम्बर हो जा, तभी तू जिंदगी का अंतिम सच क्या है ? पता लग सकेगा। ये जिन्दगी पैसों में नहीं, पैसे छोड़कर बेची बेची जायेगी। इसमें जो मिलता है वह अदृश्य महान सुखदायी धन है और जो छूटता है वह चिंता दुख अशांति का कारण ये संसार है।**

संत ने कहा यदि तुझे मेरी बात पर विश्वास नहीं आये तो मेरे चेहरे पर नजर डालकर देख तूने पूर्व में भी ऐसी ही खुशी की लहर देखी थी अंतस् की चमक देखी थी और आज भी वह चमक दिख रही है लेकिन तुझमें

वही चिंता आज भी झलक रही है **इस जिन्दगी को केवल संत के चरणों में ही बेचा जा सकता है और कहीं नहीं। जिन्दगी की दुकान वही है जिस्म की दुकानें कई मिल जाएँगी, लेकिन जिन्दगी की दुकान बड़ी खुश किस्मत से प्राप्त होती है।**

वह व्यापारी सोचने लगा कि क्या करें क्या न करें? धन एक ऐसी चीज है जिसे कमाओ तब परेशानी क्यूंकि उसके लिए छल-कपट- लड़ाई आदि सब करना पड़ता है। यदि धन संचित हो जाए तो परेशानी, उसकी सुरक्षा में चिंतित रहना पड़ता है और जब जाये तो बहुत ही दु:ख होता है।

सात दिन तक उधेड़बुन में रहने के बाद उसने फैसला किया कि धन हमने बहुत सा प्राप्त करके देख लिया लेकिन यही पाया कि यहाँ शांति नहीं है अब इसे छोड़कर थोड़ा सा समय संत के चरणों में अर्पित करके देख लूँ देखो क्या होता है? यदि जिंदगी हासिल होती है तो ठीक अन्यथा फिर घर लौट आयेंगे।

वह व्यापारी साधु के चरणों में थोड़े समय के लिये अर्पित हो गया और सब कुछ त्याग दिया त्यागते ही जीवन का रस उसके रग - रग में फैलने लगा, वह घंटों आनन्द की यात्रा में रहने लगा, जिंदगी के रस का मिठास उसे अकथनीय लगने लगा। वह स्वयं ही सोच रहा था कि मैं जिंदगी के बारे में संत से पूछता था कितनी बड़ी भूल करता था मैं स्वयं ही जिंदगी था। दुनियाँ की पगडंडियों में उसे भूल गया था। आज पता चला कि जिंदगी का कोई अंत नहीं है। **जिंदगी गैर को पाकर हासिल नहीं होती, बल्कि स्वयं में जाकर नसीब होती है और स्वयं में जाने के लिए गैर से दूर होना पड़ता है, गैर से दूर होने का इलाज एक ही है कि गैर को छोड़ दिया जाये।**

मानव इच्छा तो करता है मगर काम की कोशिश नहीं करता है चाहे कम इच्छा करो मगर सही कार्य की इच्छा करो जिससे जीवन श्रेष्ठ व सुन्दर बन सके हम इच्छा करते हैं मकान की, दुकान की, पैसों की, बच्चों की, पत्नि की, नौकरी की। अरे ! इच्छा भी करते हो और वो भी निम्न! हमें तो इच्छा भी करना नहीं आता। इच्छा करना है तो सबसे ऊँची करो। यदि तुम्हारे सामने एक तरफ एक करोड़ रुपये रखे हों और दूसरी तरफ एक अरब रुपये रखे हों और तुमसे कहा जाय कि उठा लो जो चाहते हो तो अरब पर ही हाथ मारोगे। उत्तर बिल्कुल साफ है- कि सबसे अच्छी चीज चाहते हो। इसलिए

सबसे ऊँची इच्छा करो ऐसी इच्छा करो कि फिर कभी इच्छाएँ न करनी पड़ें।

इच्छा करो तो परमात्मा की करो, अनन्त सुख की करो, मोक्ष सुख की करो, संतों के समागम की करो, जिनवाणी की करो। मगर लोग इन सबकी इच्छा न करके न जाने किस किसकी इच्छा करते हैं। कभी सोचते हैं एक लाख रुपये मिल जाते, कभी सोचते करोड़ मिल जाते, कभी सोचते अरब मिल जाते, कभी सोचते हीरा, मोती, जवाहरात मिल जाते। जिन्दगी भर इच्छाएँ करते ही चले जाते फिर भी समाप्त नहीं होतीं क्योंकि छोटी इच्छाएँ बढ़ती ही चली जातीं हैं कभी पूर्ण नहीं होतीं।

जब अदालत में एक मुल्जिम कटघरे में खड़ा हुआ तो एक वकील ने पूछा तुमने सामने वाले मकान में चोरी की ? बोला हाँ। तब वकील ने कहा तुमने सामने वाले के 500 रुपये तो निकाल लिए लेकिन बगल में एक पर्स रखा था उसमें 5000 रु. रखे थे वो क्यो नहीं उठाये? 500 रु. उठाने का क्या राज है ? वह मुल्जिम रोने लगा बहुत देर तक रोता रहा तो जज ने पूछा तू क्यों रो रहा है ? मुल्जिम बोला साहब उसका मुझसे जिक्र मत कीजिए। यह बात मेरी पत्नि को पता चल गई थी तो आठ दिन तक खाना नहीं खाया कि मैंने बगल वाला 5000 रु. वाला पर्स क्यों छोड़ा? (पब्लिक में हँसी) उसका मुझे भी बहुत दु:ख है मुझे और पीड़ा मत पहुँचाओ मैं पहले से ही बहुत दु:खी हूँ। कहना यही है कि इच्छा भी करते हो वह भी थोड़ी।

एक बार एक व्यक्ति भगवान महावीर के समवशरण में पहुँचा और बोला प्रभु ! मैं बहुत चिंतित हूँ। प्रभु ने कहा क्या बात है ? अपनी चिंता प्रकट करो। उसने कहा – आप सब जीवों को मुक्ति व मोक्ष की प्रेरणा देते हैं। यदि सब जीव मुक्त हो जाएँगे, तो जाएँगे कहाँ ? प्रभु ने कहा वत्स तुम्हारा प्रश्न बिल्कुल सही है। यह कागज पेन शहर में लेकर जाओ और सभी व्यक्तियों से पूछकर आओ किसकी क्या इच्छा है। वह सारे शहर में घूमा और सभी व्यक्तियों के पास पहुँचा और सभी से पूछा तुम्हारी क्या इच्छा है अपनी अपनी इच्छा बताओ। किसी ने धन की इच्छा की, किसी ने मकान की, किसी ने दुकान की, किसी ने रत्नों की, किसी ने पत्नि की, किसी ने बच्चों की लेकिन किसी ने भी मोक्ष की इच्छा नहीं की। मुक्ति पाने की कामना किसी ने भी नहीं की। उस व्यक्ति को सब कुछ समझ में आ गया कि मात्र प्रेरणा देने से मोक्ष नहीं होता बल्कि इच्छाएँ न करने से मोक्ष सुख मिलता है।

अरे ! इन सब इच्छाओं का त्याग कर मात्र एक इच्छा करो, मोक्ष सुख की। तभी मुक्ति रूपी माधुर्य की प्राप्ति होगी। इच्छाओं को विष के

समान छोड़ दो। विषयों से, इच्छाओं से, अनासक्त हो जाओ तभी जिन्दगी की कीमत समझ में आएगी। **जिन्दगी की कीमत तो दो कोड़ी की भी नहीं है, एक गिलास पानी जितनी भी नहीं है।**

सिकन्दर के बारे में आप सब जानते हैं उसने जो भी चाहा वह हासिल किया। सारे देश को, सारे राजाओं को अपना गुलाम बना लिया। एक बार जब सिकन्दर भारत विजय के लिए आ रहा था तो उसके गुरु ''डायोजनिज'' ने उससे कहा सिकन्दर भारत से लौटने से पहले तू एक दिगम्बर संत को लेते आना। सिकन्दर ने कहा ठीक है – युद्ध समाप्त हुआ तो सिकन्दर को अपने गुरु की बात याद आई। उसने गाँव वालों से पूछा तो पता चला कि गाँव के बाहर एक दिगम्बर संत हैं। सिकन्दर ने सिपाहियों से कहा कि संत को पकड़ लाओ। सिपाही संत के पास पहुँचे और कहा कि सिकन्दर का आदेश है कि आप उनकी सेवा में हाजिर हों। संत ने कहा–कौन सा सिकन्दर ? सिपाही बोले तुम्हें इतना ही नहीं पता कि सिकन्दर कौन है ? सिकन्दर को तो एक छोटे से छोटा बच्चा भी जानता है। सिपाहियों ने कहा चलो सिकन्दर के पास सब पता चल जाएगा कि सिकन्दर कौन है ? साधु ने कहा – बोल देना सिकन्दर से कि साधु वे होते हैं जो किसी की आज्ञा नहीं मानते स्वयं की आज्ञा मानते हैं। मैं किसी का गुलाम नहीं स्वयं का मालिक हूँ तुम्हें मिलना है तो खुद ही मिलने आ जाओ। सिपाही वापिस सिकन्दर के पास गये सारी बात बताई इससे सिकन्दर ने अपनी तौहीन समझी। गुस्से में आग बबूला हो गया कि जिसके पास न धन है न दौलत है यहाँ तक कि तन ढकने को कपड़े तक नहीं उसकी यह मजाल, इतनी हिम्मत कि देश के सिकन्दर की आज्ञा को ठुकरा दे। सिकन्दर ने सेनापति को आज्ञा दी, सेनापति साधु के पास पहुँचा और बोला – सम्राट् सिकन्दर का आदेश है कि तुम्हें चलना होगा और यदि न चल पाये तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा, संत ने कहा–जाओ, अपने सम्राट् से कह देना जिसे तुम मारना चाहते हो वह तो पहले ही मर चुका है। सेनापति सिकन्दर के पास पहुँचा। सेनापति ने सिकन्दर को सारी बात बतायी तो सिकन्दर ने स्वयं जाने का निश्चय किया। चलो हम स्वयं ही जाकर देखते हैं, सिकन्दर साधु के पास पहुँचा और कहा – तुम पहले व्यक्ति हो जिसने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया है। साधु ने कहा मैं ऐसा ही हूँ मैं दुनियाँ में किसी की आज्ञा को स्वीकार नहीं करता हूँ। सिकन्दर ने कहा तुम नहीं समझते तुम्हारी गर्दन के दो टुकड़े हो सकते हैं, साधु ने कहा कौन किसके टुकड़े करता है मैं

भी देखना चाहता हूँ। सिकन्दर ने सोचा आखिर इसके पास है क्या जो इतनी निर्भीकता से कह रहा है। सिकन्दर ने कहा तुम्हें नहीं मालूम **मैं इस देश का राजा हूँ।** संत ने कहा तू तो केवल इस देश का राजा है, **मैं सारी दुनिया का राजा हूँ मैंने सारी दुनिया को जीता है।** सिकन्दर ने सोचा पता नहीं ये कहाँ का मालिक है देखने में तो नंगा है, बातें बड़ी – बड़ी करता है। सिकन्दर ने कहा निकाल क्या है तेरे पास, नहीं तो अभी सिर को धड़ से अलग कर दिया जायेगा। तब संत ने कहा – **तू गर्दन काटेगा तो मैं भी देखूँगा उसे कटते हुए। मुझे तो दुनिया की कोई हस्ती नहीं मार सकती। जो मरेगा वो मैं नहीं हूँ। मुझे मारने वाले तो मर चुके। मैं वह हूँ जिसका तलवार भी कुछ नहीं बिगाड़ सकती।**

साधु की बात सुनकर सिकन्दर के हाथ काँपने लगे उसने कहा आज मेरी पहली बार तलवार क्यों काँप रही है? सिकन्दर ने कहा आखिर तुम हो कौन? मुनिराज ने कहा मैं इसी को जानने के लिए निकला हूँ कि मैं कौन हूँ? अन्त में सिकन्दर हारकर बोला तुम मेरे साथ चलो मुझे तुम जैसे व्यक्ति की जरूरत है। साधु ने कहा मैं ऐसा व्यक्ति हूँ जिस पर किसी की आज्ञा नहीं चलती, सिकन्दर ने कहा मेरी विनम्र प्रार्थना स्वीकार कीजिए, साधु ने कहा मैं चल नहीं सकता और तू भी अपने देश जीते जी वापिस नहीं पहुँच सकता बीच में ही लुढ़क जायेगा अर्थात् तेरे जीवन का अन्त समय आने वाला है। सिकन्दर घबरा गया बोला ऐसा नहीं हो सकता, मुझे मारने वाला कोई पैदा नहीं हुआ। देखते हैं मुझे कौन मारता है? मैं जीते जी अपने देश वापिस जाऊँगा। एक दिगम्बर संत से सिकन्दर घबराया। घबड़ाकर अपने देश वापिस जाने के लिए तैयार हुआ सिकंदर के सम्बंध में एक किंवदन्ती आती है –

सिकन्दर शहंशाह जाता सभी हाली बहाली थे।
सभी दौलत संग में थी मगर दो हाथ खाली थे।।

मैं बताना चाहता हूँ कि जिन्दगी कितनी सी है? **जिन्दगी की कीमत एक गिलास की भी नहीं।** जिस जिन्दगी को अपना समझा वही जीवन क्षण मात्र में समाप्त हो जायेगा तो सिकन्दर वापिस अपने देश आ रहा था, दूर – दूर तक पानी नहीं दिखा रेगिस्तान ही रेगिस्तान दिखाई दे रहा था, प्यास के मारे गला सूख रहा था, काफी दूर चलता रहा, चलते – चलते पानी – पानी चिल्लाने लगा और गिर पड़ा बहुत सारे लोग उसके पास आये लेकिन कोई भी पानी लेकर नहीं आया। सारे लोग खड़े हुये हैं लोग इधर–उधर भाग रहे हैं पानी की

तलाश में मगर किसी को भी पानी नहीं मिल रहा था। इतने में एक देव आया, देव ने आकरके एक गिलास पानी बनाया, देव बोला, सिकन्दर आँखें खोलो, मेरे पास पानी है। सिकन्दर पानी पीने के लिए उठा तो देव ने अपनी ओर गिलास खींच लिया बोला, पहले इस पानी की कीमत चुकाओ, तभी तुम पानी पी सकते हो। सिकन्दर ने कहा तुम क्या चाहते हो? मेरे हाथी घोड़ों पर खज़ाना लदा है जितना चाहो ले लो मगर मुझे एक गिलास पानी पिला दो, देव बोला – अभी इस पानी की कीमत नहीं हुई, तब सिकन्दर ने कहा तू क्या चाहता है? मेरा आधा राज्य ले ले 75 प्रतिशत राज्य ले ले, तब भी देव ने कहा, नहीं सिकन्दर, अभी इस पानी की कीमत पूरी नहीं हुई यदि पानी पीना है तो कीमत चुकाओ तभी पानी मिल सकता है अन्यथा नहीं, तब सिकन्दर ने कहा मेरा पूरा राज्य ले लो मगर एक गिलास पानी पिला दो, तब भी देव ने कहा अभी भी इस पानी की कीमत पूरी नहीं हुई तब सिकन्दर रोने लगा चीख चीख कर चिल्लाने लगा बोला मुझे और मत सताओ, मुझे दु:खी मत करो, मुझ पर रहम खाओ, मेरा कंठ सूख चुका है यदि पानी नहीं मिला तो ये जीवन भी समाप्त हो जायेगा, मेरे प्राण अब तुम्हारे हाथ में हैं, कृपा करके थोड़ा सा पानी पिला दो। देव बोला– **सिकन्दर, तुझे बहुत अहंकार था तू अपने आप को शहंशाह समझता था पूरे राज्य को अपना समझता था और आज जब तू संकट में है तब तुझे कोई एक गिलास पानी भी नहीं पिला सका। सिकन्दर तेरा राज्य एक गिलास पानी का भी नहीं है।** सिकन्दर, देव की बात सुनकर रोने लगा बोला आज तुमने मेरी आँखें खोल दीं। तब देव बोला **सिकन्दर तुमने सारी जिन्दगी दूसरों के लिए खपा दी अपने लिए कुछ भी नहीं किया,** इस धरती पर बड़े बड़े धाराशयी हो गये क्योंकि ये नियति है जिसका जन्म हुआ है वह एक न एक दिन अवश्य मरेगा तूने जिन्दगी भर जो किया है जो धन दौलत खजाना एकत्रित किया है सब यहीं रह जायेगा कुछ भी साथ नहीं जायेगा जिस समय तू अपनी देह का त्याग करेगा तू अपने हाथों से एक चादर भी नहीं बिछा पायेगा सब कुछ इस धरती पर ही रह जायेगा। कहा भी है–

इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा
बीतने वाली घड़ी को कौन लौटा पायेगा
जिन्दगी भर का कमाया साथ में ना जायेगा
यह समय गर खो दिया तो बाद में पछतायेगा।

देव ने सिकन्दर से कहा तेरा अन्त समय निकट है इसलिए अब तू

परमात्मा का स्मरण कर, प्रभु का ध्यान कर तभी तेरे पापों का प्रायश्चित्त हो सकेगा तब कहा –

कर ले आतम ध्यान बाबा, कर ले आतम ध्यान
तब ही हो कल्याण बाबा तब ही हो कल्याण।।
धन वैभव ये महल खज़ाना, कुछ भी साथ न जायेगा
सुबह खिला जो फूल बाग में साँझ समय मुरझायेगा
कर ले धर्म ध्यानबाबा, कर ले धर्मध्यान.............

तब सिकन्दर ने अन्त समय में परमात्मा का स्मरण किया और कहा अब मुझे जब भी दूसरा जीवन मिले तब सन्तों के निकट व परमात्मा के स्मरण में अपना जीवन व्यतीत कर सकूँ इतना कहते ही सिकन्दर हमेशा के लिये सो गया, अपनी अन्तिम साँसों को रोक लिया, हमेशा–हमेशा के लिये इस पार्थिव शरीर से विदा ले ली, कहने का तात्पर्य इतना ही है **हम सारा जीवन व्यर्थ गँवा देते हैं। अपने लिये कुछ भी नहीं करते, अपने लिये नहीं जीते, दूसरों के लिये जीते हैं। अपने बच्चों के लिये जीते हैं, पत्नि के लिये, माता–पिता के लिये, परिवार के लिये, धन दौलत के लिये तुम जीते हो और अपने को समझदार समझते हो कि मेरे जैसा कोई समझदार नहीं। अपने को समझदार समझते हो और बेवकूफों जैसी, मूर्खों जैसी बातें करते हो,** मन्दिर भी जाते हो, परमात्मा के दरबार में जाते हो, संतों के दरबार में जाते हो वहाँ पर भी इच्छा लेकर। आज का मानव भगवान के पास प्रार्थना नहीं कामना, इच्छा, अपेक्षा लेकर जाता है कि मैं परीक्षा में प्रथम आ जाऊँ, मेरे बेटे की शादी में अच्छा दहेज मिल जाये एक कार मिल जाये, कलर टी.वी मिल जाये, बच्चा मिल जाये, शादी हो जाये, पत्नि मिल जाये।

एक बार एक नास्तिक व्यक्ति अचानक ही बड़ा धार्मिक हो गया प्रभु की भक्ति तीनों टाइम करने लगा, मन्दिर जाकर घण्टों प्रभु की भक्ति करता, पाठ करता लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि पहले तो यह व्यक्ति बिल्कुल आधार्मिक था अचानक यह हनुमान जी की भक्ति कैसे करने लगा? क्या कारण है? एक दिन उसके पड़ौसी ने पूछ ही लिया कि यह बताओ अचानक तुम्हें यह क्या हो गया? तुम हनुमान जी की भक्ति कैसे करने लगे? तुम तो नास्तिक थे। तो उसने कहा – (शायद वह आप में से कोई होगा) मैं हनुमानजी की भक्ति, प्रार्थना, आराधना इसलिए करता हूँ कि हनुमान जी ने रामचन्द्र जी कि पत्नि सीता को खोजा और मेरी पत्नि न जाने

कहाँ चली गई इसलिए वे अब मेरी पत्नि को ढूँढ़ेंगे। **मैं हनुमानजी से माँगता हूँ, प्रभु जिस प्रकार आपने रामचन्द्रजी की पत्नि को खोजा उसी प्रकरा मेरी पत्नि को भी खोजकर लाईये।**

परमात्मा के पास भक्ति कर रहा वह भी कामना वासना इच्छा को लेकर। अरे! भगवान के दर पर तो मात्र प्रार्थना कीजिए तभी जीवन की सार्थकता है तभी हमारा नर जन्म सफल हो सकता है। यदि इच्छा ही इच्छा करते रहे तो जीवन उसी प्रकार है जैसे **अन्धकार में जन्म लिया और अन्धकार में ही समाप्त हो गये।**

चार प्रकार के आदमी हुआ करते हैं –**एक वे होते हैं जो प्रकाश में आते हैं और प्रकाश में चले जाते हैं** ऐसे हमारे महापुरुष हुए हैं, राम, महावीर, गौतम, आदिनाथ, रसूल, आदिम, ब्रह्मा, आदि **जिन्होंने उजाले में जन्म लिया, उजाले में ही रहे और जब अन्त हुआ तब इस पार्थिव शरीर का त्याग किया तो उजाले के साथ ही किया।** दूसरे प्रकार के व्यक्ति वे होते हैं **जो उजाले में आये, मगर अंधेरे में रहकर अंधेरे में ही मर गये। जन्म तो प्रकाश में लिया मगर बीच में ऐसे गलत कार्य, अत्याचार किये, पाप कार्य किये** जिस कारण अंधेरे में इस पार्थिव शरीर का त्याग किया, **लोगों को अन्धकार दिखाया और स्वयं अंधेरे में ही रह गये।** जैसे – कंस, रावण, दुर्योधन, राजा, महाराजा आदि इनका जन्म तो उजाले में हुआ मगर मरण अंधेरे में हुआ इन्होंने अपने जलते हुए चिराग को बुझा दिया। तीसरे प्रकार के वे व्यक्ति होते हैं **जो अंधेरे में आते हैं और प्रकाश में जाते हैं ऐसे हमारे दिगम्बर संत हैं हैं** जिन्होंने जन्म तो अंधकार में लिया मगर जन्म लेने के बाद ऐसे पुण्य कार्य किये, अच्छे – अच्छे कार्य किये जिस कारण समस्त जन मानस को प्रकाश का उपदेश देकर स्वयं समाधि को प्राप्त करके प्रकाश में चले गये उजाला ही उजाला दे गये – चौथे प्रकार के वे व्यक्ति होते हैं जो अंधेरे में जन्म लेते और अंधेरे में ही मर जाते हैं जैसे आये थे वैसे ही मर जाते हैं, स्वयं के लिये कुछ भी नहीं कर पाते, पर के लिये पर की चाह में अपनी सारी जिन्दगी अंधकार में बिता देते हैं अपने जीवन को दाह रूप बना लेते हैं क्योंकि कहा है चाह ही दाह है जो चिता का काम करती है –

चाह तो चाह है दाह ही दाह है
चाह में मिल सकी कब यहाँ राह है ?
गर तुम्हारे दिले चाह की दाह ना
उसके दिल में यहाँ बन रही राह है।

यदि चाह नहीं तो मंजिल दिख सकती है, मार्ग मिल सकता है यदि चाह इच्छा आकांक्षा मौजूद है तो राह की प्राप्ति, मार्ग की प्राप्ति होना असंभव ह

क्योंकि कहा है इच्छा आकाश के समान अनन्त है उसका कभी अन्त नहीं होता। कहा है – **सूर्य ठण्डा हो सकता है, चन्द्रमा प्रतापी हो सकता है, समुद्र, नदियों के जल से तृप्त हो सकता है, वायु स्थिर हो सकती है मगर आशा रुपी गड्ढा, इच्छा रुपी गड्ढा, लोभ रुपी गड्ढा, तृष्णा रुपी गड्ढा कभी भरा नहीं जा सकता।** इन सबका जन्मदाता है ये मन। जो एक सैकेंड में पल भर में अनन्त इच्छाओं को जन्म दे देता है पल भर में चारों गतियों के चक्कर लगा आता है देश विदेश की यात्रा कर लेता है सिद्धशिला पर बैठे सिद्ध भगवान से मिला देता है, सिद्ध क्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रों के दर्शन करा देता है, देश, विदेश में बैठे सगे सम्बन्धियों से मिला देता है ये सब फालतू मन का काम है जो बिन पैसे के घूमता रहता है इसीलिए कहा –

भावों की ही पगडंडी पर सरपट दौड़ा करता मन
भावों ही भावों में भव के स्वपन सँजौता रहता मन
भावों ही भावों में भव के बंध बाँधता रहता मन
भावों ही भावों में भव के बंध काटता रहता मन

भाव हृदय से उठते हैं हृदय ने जिसे सत्य स्वीकार कर लिया है हमारी ज़िंदगी उसी को आधार बनाकर आगे बढ़ती चली जाती है भावों में बैठा-बैठा कई स्वप्न सँजौता रहता है आज आदमी की 80 प्रतिशत ज़िन्दगी स्वप्न में गुजरती है 20 प्रतिशत कार्य करता है उसमें भी कितने स्वप्न साकार हो पाते हैं इसका प्रतिशत आदमी को स्वयं ही लगाना चाहिए। हम बैठे-बैठे भावों के आधार पर कहीं फिजूल में ही कर्म बंध कर लेते हैं जिनका खामियाजा हमें बाद में भुगतना पड़ता है। यदि अज्ञान का साया हमारे ऊपर हो तो फिर हमें भगवान की पूजा, साधुओं की संगति, संतो की वाणी बेकार महसूस होगी

जब भाव गलत हों तब अच्छी बात भी खराब लगती है हित की बात बताने वाला हितैषी भी शत्रु लगता है और गलत की पुष्टि करने वाला

शत्रु अच्छा लगने लगता है। अज्ञान का अंधेरा चारों ओर फैला हुआ है ज्ञान का दीपक कहीं कहीं ही जल रहा है। रात में छत पर जाकर देखो चारों ओर अंधेरा है लेकिन दीप कहीं कहीं जलते दिखाई देते हैं।

अज्ञानी व्यक्ति को, मिथ्यादृष्टि जीव को सत्य बात भी असत्य लगती है मीठी बात भी कड़वी लगती है कितना ही समझाओ सब गलत

लगता है – एक बात याद आती है – एक बार मुंगेरीलाल को शराब की लत पड़ गयी, स्थिति कमजोर हो गयी, स्वास्थ्य बिगड़ गया एक दिन डॉ. के यहाँ गया, डॉ. ने कहा देखो मुंगेरी यदि तुम्हें ठीक होना है तो शराब को छोड़ना पड़ेगी, डॉ. ने एक बोतल में शराब को भरा उसमें केंचुए को डाल दिया जैसे ही केंचुआ अन्दर पहुँचा तो तड़फने लगा, थोड़ी देर बाद केंचुआ मर गया, डॉ. ने कहा मुंगेरी कुछ समझ में आया, बोला डॉ. साहब मुझे सब कुछ समझ में आ गया। एक दिन मुंगेरी नशे में डॉ. साहब के पास पहुँचा डॉ. ने कहा मुंगेरी तुमने शराब क्यों पी तुमने तो कहा था मुझे सब कुछ समझ में आ गया कि शराब नहीं पियेंगे, तब मुंगेरी ने कहा। मुझे सब कुछ समझ में आ गया। मेरे पेट में जितने भी कीड़े होंगे सारे कीड़े मर जायेंगे।

मिथ्यादृष्टि, बहिरात्मा व्यक्ति विपरीत ही सोचता है ऐसे व्यक्ति को क्या कहें कंजूस कहें या आकांक्षी कहें, ढोंगी कहें या अज्ञानी कहें क्या कहें ऐसे व्यक्ति ही इच्छा, तृष्णा, आकांक्षा चाह भी करते हैं तो इतनी चाह कर लेते कि पेट की नहीं पेटी की चिन्ता कर लेते हैं सातवी पीढ़ी का इन्तजाम करके आँठवी पीढ़ी का क्या होगा ? इस प्रकार की चाह करते रहते हैं, – मेरे बाद मेरे बेटे, नाती, पोते, सगे सम्बन्धियों का क्या होगा ? इस प्रकार की चाह करते रहते हैं। इस चाह को समाप्त करो तो जिन्दगी ऐसी है जिसमें आनन्द ही आनन्द है जहाँ कोई विकल्प नहीं है, राग, द्वेष नहीं है, कषाय नहीं है, न घर, न दुकान, न पत्नि, न बच्चे, न शरीर कुछ भी नहीं केवल धर्म ही धर्म, आनन्द ही आनन्द।

मनोवैज्ञानिक जैम्स का कहना है – ''**इंसान की समस्त इच्छाओं में से एक इच्छा है – प्रशंसा पाने की इच्छा।** इंसान स्वयं की प्रशंसा पाने के लिये समस्त इच्छाओं को बनाता है कि मेरी प्रशंसा हो, मुझे सब मान सम्मान दें, मुझे सब आदर दें, मुझे सब पसन्द करें, यदि मेरे पास सब कुछ होगा रुपये पैसे, मकान, दुकान, पत्नि, बच्चे तो मेरी प्रशंसा होगी। लेकिन ध्यान रखना न तो धन वैभव से जीवन सुखी है, न मकान दुकान से जीवन सुखी है, न नौकरी करने से, न पत्नि – बच्चों से जीवन सुखी है, न भोग विलास से, यदि आदमी सुखी है, प्रसन्न है, खुश है तो स्वयं को पाने

की भावना से, परमात्मा को पाने की भावना से, समीचीन धर्म पाने की इच्छा से प्रसन्न है। और यदि दुखी है तो इच्छाओं से, कामनाओं वासनाओं से दुखी है यदि इच्छाएँ बहुत हैं तो बहुत सारा धन भी कम है और यदि इच्छाएँ नहीं हैं तो कम धन का भी गम नहीं, वही प्रसन्न है और आनन्दित है।

कभी कभी कई लोग सम्मान पाने के पीछे खूब दान देते हैं, कई लोग सम्मान पाने के पीछे शादी विवाह में खूब ठाट–बाट दिखाते हैं कोई मकान आदि बनाते हैं। कई अपने बच्चों को पढ़ा–लिखाकर बहुत बड़ा अफसर बनाना चाहते हैं। सब जगह सम्मान की भूख समाई हुई है। आदमी दिन–रात धन कमाने में जुटा हुआ है मात्र सम्मान की भूख को तृप्त करने के लिए। आदमी तब दुखी होता है जब ज़िंदगी सम्मान हेतु धन के लिए गुजार देता है और सम्मान की चाह पूरी हो नहीं पाती है फिर अन्त में दहाड़ें मार मारकर रोना ही रह जाता है। अपनी गलती पर पछताता है। ये ज़िंदगी बेकार कर जाता है।

एक व्यक्ति था, प्रसन्न था, सुखी था, संतुष्ट था क्योंकि सुबह जाता शाम को मेहनत मजदूरी करके लौटता था, स्वयं खाता, परिवार को खिलाता, स्वयं प्रसन्न व परिवार को प्रसन्न रखता था इसी में वह प्रसन्न व खुश था कई दिन बाद एक समय ऐसा आया जब उसे काम नहीं मिला, बच्चे, पत्नि भूख से तड़फ रहे थे, पेट भरने के लिये कुछ भी नहीं था, वह चिन्तित व दुखी रहने लगा। एक दिन वह राजा के पास पहुँचा बोला राजन्! मुझे कुछ ऐसा कार्य दीजिए जिससे हम अपने परिवार का जीवन यापन कर सकूँ मैं बहुत गरीब हूँ। पेट भरने को एक समय की रोटी भी नहीं होती, बच्चे भूख से तड़फ रहे हैं। उनकी वेदना मुझसे देखी नहीं जाती इसलिये हे राजन्! मैं चाहता हूँ मुझे कुछ धन सम्पत्ति मिल जाती, जिससे मैं कोई व्यापार करके अपने परिवार का जीवन यापन करता। मुझे कोई उपाय बताइये। राजन्! ने विचार किया, विचार करने के बाद कहा– कि नगर के अंतिम छोर पर जमीन खेती के योग्य है वहाँ पर जमीन फालतू पड़ी है तुम उस जमीन पर खेती करो लेकिन समय का पूरा ध्यान रखना सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तुम तक जितनी जगह अपने कदमों से नाप लोगे उतनी जगह तुम्हारे नाम की हो जायेगी, राजन् की बात सुनकर वह खुश हो गया, बोला राजन् इस बात का मैं पूरा – पूरा ध्यान रखूँगा। दूसरे दिन सुबह

जल्दी उठा, उठकर तैयार हुआ, भोजन बनाया साथ में कुछ भोजन पीठ पर बाँधा और ठीक 6 बजे से कार्य प्रारम्भ किया पूर्व दिशा से दौड़ना प्रारम्भ किया बेहताशा 6 से 9 बजे तक दौड़ता रहा पसीना –पसीना हो गया लेकिन रुका नहीं सोचा यदि रुकते हैं तो जमीन कम हो जाएगी। फिर वह दक्षिण दिशा की ओर 12 बजे तक दौड़ा बीच में प्यास भी लगी मगर पानी नहीं

पिया सोचा यदि पानी पीते हैं तो समय बर्बाद होगा इससे जमीन कम हो जाएगी और जो जमीन कम हो जाएगी उसमें हीरा, सोना, चाँदी, रुपया, पैसा गड़ा हो तो वह नहीं मिल पाएगा और वह दौड़ता ही गया, रुका नहीं जैसे दुकानदारी चल रही हो, शाम का समय हो 8–10 ग्राहक वेटिंग लाइन में खड़े हों तो व्यक्ति सोचता है। छोड़ो आज का खाना, पहले इन्हें काटो, पहले इन्हें निपटाओ, खाना तो कल भी खा लेंगे मगर ग्राहक चले गये तो कल का कोई भरोसा नहीं **Time & customer wait for non** जिंदगी प्यारी नहीं, भोजन प्यारा नहीं धन सबसे प्यारा है। धन के कारण मृत्यु भी हो जाए तो कोई बात नहीं। वह व्यक्ति 12 बजे तक दौड़ता ही रहा फिर उसने पश्चिम दिशा की ओर 3 बजे तक दौड़ लगाई। थक गया, थककर गिर पड़ा। भोजन साथ था पानी साथ था फिर सोचा यदि खाना खाते हैं तो जमीन कम हो जाएगी। पानी पीता हूँ तो भी समय बर्बाद होगा और जमीन कम हो जाएगी। उठा और भूखा प्यासा ही दौड़ने लगा अन्त में 3 बजे से उत्तर दिशा की ओर दौड़ना शुरू किया लगभग 5 बजे थककर गिर पड़ा, उठा तो फिर गिरा, मगर पानी नहीं पिया दो चार बार गिरा, फिर दौड़ा, अन्त में पौने 6 बजे अपनी जीवन लीला को समाप्त कर गया। धन के कारण, जमीन के कारण व्यक्ति सब कुछ भूल जाता है अपने आपको भी भूल जाता है। अपना विवेक खो देता है। जीवन का क्या उद्देश्य है वह समझ नहीं पाता है। **''हम ज़िंदगी के लिये जियें तो हमें कहीं दुख नज़र नहीं आयेगा और जायदाद के लिये जियें तो कष्ट ही कष्ट नज़र आयेंगे''**

12 घण्टे मे 1000 वर्ग कि.मी. जमीन नापकर वह व्यक्ति चला गया। जमीन के कारण अपनी ज़िंदगी ही दाँव पर लगा दी खुद ही नहीं समझ पाया कि ये जमीन मेरी होगी या नहीं ? और इसी पर विश्वास कर सभी संसारी प्राणी सारा जीवन व्यर्थ गँवा देते हैं और अंत में मर जाते हैं सामायिक पाठ में आ. अमितगति कहते हैं।

न सन्ति बाह्या मम केचनार्थाः,
भवामि तेषां न कदाचनाहम्।
इत्थं विनिश्चित्य विमुञ्च बाह्यं,
स्वस्थं सदा त्वं भव भद्र! मुक्त्यै।।

बाह्य पदार्थ आदि किंचित मात्र भी मेरे नहीं हैं इसे छोड़ने पर ही सुख शान्ति प्रदान करने वाली मुक्ति प्राप्त होती है।

लेकिन आदमी को जिस पर विश्वास करना चाहिए उस पर तो करता

नहीं और न जाने किस – किस पर विश्वास कर बैठता है। पत्नि बच्चे, मित्र, मकान, दुकान ये सब हमारे हों, यह जरूरी नहीं, शरीर भी मेरा नहीं है शुद्ध निश्चय से मेरा वास्तविक स्वरूप ही मेरा है वह पदार्थों में नहीं है। ज्ञान दर्शन रूप होना मेरा स्वभाव है मैं अरूपी हूँ, शरीर का एक रोम भी मेरा नहीं है फिर यह संसार की अन्य वस्तुएँ मेरी कैसे हो सकती हैं? समयसार में आ. कुन्द कुन्द कहते हैं –

अहमिक्को खलु सुद्धो, दंसण णाण मइयो सदारूवी
ण हि अत्थि मज्झ किंचवि णहि अण्णं परमाणु मे तं वि।।

इसलिए सभी पर पदार्थों पर विश्वास छोड़कर केवल अपनी आत्मा रूपी परमात्मा पर विश्वास करो। आत्मा ही मेरी है और कुछ भी मेरा नहीं है। संसार की कोई वस्तु मेरे साथ जाने वाली नहीं यदि कुछ साथ जाएगा तो मेरे अच्छे – बुरे कर्म जायेंगे, वही मेरे हैं और कुछ भी मेरा नहीं है, आत्मा अजर – अमर अविनाशी है। इसीलिए आत्मा पर विश्वास करो। नियमसार गाथा नं. 102 में आचार्यवर कहते हैं –

आत्मा पर विश्वास करना ही जिन्दगी है हमें जिन्दगी को बहुत बड़ी बनाना है तो इच्छाओं को कम कर दें। जैसे – जैसे इच्छाएँ कम होंगीं बहुत सारा अनुभव होगा और जैसे ही अनुभव होगा जीवन की उपलब्धि हो जाएगी।

एक व्यक्ति वह होता है जो बहुत पाने के लिए थोड़ा सा त्याग देता है, एक व्यक्ति वह होता है जो थोड़ा सा पाने के लिए बहुत कुछ छोड़ देता है पूछा जाए कि कौन सा बुद्धिमान है ? तो आप कहेंगे थोड़ा छोड़ने पर बहुत मिले श्रेष्ठ तो वही है, जैसे – एक साधु घर परिवार छोड़कर आता है, माता–पिता, बहिन–भाई, पुत्र–मित्र, दुकान सभी छोड़कर आता है दीक्षा ले लेता है तब उसे सभी जन माँ – पिता, बहिन–भाई, दोस्त, गुरु शिष्य सभी

मिल जाते हैं एक घर छोड़ा सभी घर उसके हो गये क्योंकि वह प्रत्येक श्रावक के घर आहार करने जाता है। अब सारे घर उसके हो जाते हैं। थोड़ा सा छोड़ा था मिल अधिक गया। जो एक घर बनाता है वह एक घर का ही हो पाता है, साधु अपना वास्तविक घर पाने के लिये बना हुआ घर भी छोड़ देता है। वह दुनियाँ के हर घर का हो जाता है, घर–घर का हो जाता है। घर छोड़े वह साधु नहीं, सभी को अपना घर बना ले वह साधु है घर तो एक सर्विस वाला भी छोड़ देता है। जिन्दगी वहीं है जहाँ हमारा उत्थान होता हो और किसी को भी

अपमान करने की, ऊँगली उठाने की हिम्मत न पड़ती है।

जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाने के लिए हमें ऊपर वाले लोगों की तरफ देखना होगा हमारी नजर ऊपर होगी तो हमारा यह शरीर का गुब्बारा ऊपर की ओर उठेगा अन्यथा गुब्बारा नीचे तो स्वयमेव गिरता ही है। ऊपर उठने के लिए विशेष गैस की जरूरत है नीचे गिरने के लिए सभी गैसें हैं वैसे ही जिन्दगी को उठाने के लिए धर्म है, संत हैं, परमात्मा है लेकिन गिराने के लिए दुनियाँ में कई हैं।

एक कंजूस सेठ अपने चार मंजिल मकान के ऊपर के कमरे पर छप्पर लगा रहा था तभी अचानक घर की घंटी बजी, उसने ऊपर से ही पूछा कि कौन है ? नीचे भिखारी खड़ा हुआ था उसने छिप करके कहा कि मैं हूँ यदि वह यह कहता कि **I am a beggar** तो शायद सेठ कहता कि चले जाओ यहाँ से। सेठ ने सोचा क्या मालूम कोई ग्राहक होगा जो भुगतान करने आया हो, वह सेठ मोटा तो था ही धीरे से तीसरी मंजिल की बालकनी में आया फिर पूछा कौन है ? फिर उसने उत्तर दिया कि मैं हूँ। अब तो उसे नीचे आना ही पड़ा। लोभ नीचे तक ले आया उतरते-उतरते थक गया मोटे लोगों की बड़ी आफत है, चढ़ें तो थकें, उतरें तो परेशान रहें। **मोटे आदमी परेशान न हों इसलिए हँसमुख रहते हैं।** एक बार एक व्यक्ति ने पूछा मोटे लोग हँसमुख होते हैं या हँसने से मोटे हो जाते हैं तो हमने कहा अभी तक तो तुमने यही सुना होगा कि हँसने से मोटे हो जाते हैं। लेकिन मेरा उत्तर यह है कि जो मोटे होते हैं वो हँसते रहते हैं उसने पूछा ऐसा क्यों होता है? हमने कहा- मोटे व्यक्ति भाग नहीं सकते इसीलिए वो लड़ना नहीं चाहते, न लड़ने का एक ही उपाय है कि हँसते रहो इसीलिए मोटे लोग हँसते ही रहते हैं। (पब्लिक में जोरदार हँसी)

वह सेठ मुश्किल से नीचे आया और उसने दरवाजा खोलकर देखा तो सामने भिखारी खड़ा था सेठ बोला- क्या बात है, क्या चाहिए ? भिखारी बोला - मैं भीख के अलावा क्या माँग सकता हूँ भीख चाहिए। सेठ झल्लाया उस पर चिल्लाया - तुझे भीख चाहिए थी तो पहिले ही बोल देता, इतना नीचे उतार कर क्यों बोला ? भिखारी बोला - यदि हम पूर्व में ही बता देते तो तुम ऊपर से ही मना कर देते, नीचे नहीं आते।

सेठ को बहुत ही गुस्सा आया लेकिन क्या करता भिखारी को मार भी नहीं सकता, नीच को क्या मारना वो स्वयं ही कर्मों की मार से नीच है, सेठ ने

कहा – ऊपर चल, तुझे वहीं भीख देंगे। भिखारी ने कहा–कहीं भी दो मुझे तो भीख लेना है। सेठ दूसरी मंजिल पर चढ़ा – भिखारी बोला सेठ जी भीख दो। सेठ बोला–और ऊपर चल – तीसरी मंजिल पर पहुँचकर भिखारी ने फिर कहा – भीख दो–तो सेठ ने कहा और ऊपर देंगे। भिखारी और ऊपर चढ़ता गया, छत पर पहुँचकर सेठ अपने काम में लग गया भिखारी ने कहा सेठ जी भीख दो–सेठ जोर से बोला–नहीं देना है भीख। भिखारी ने कहा नहीं–देनी थी तो नीचे ही कह देते इतने ऊपर क्यों कहा ? सेठ बोला तुझे भीख लेनी थी तो नीचे से ही कह देता इतने ऊपर से हमें नीचे क्यों उतरवाया? तूने मुझे नीचे उतरवाकर ऊपर चढ़ाया मैने तुझे ऊपर चढ़ाकर नीचे उतरवा दिया बात बराबर हो गई। (सभा में हँसी)

ऊपर वाला–ऊँचा आदमी, नीचे वाले को भी ऊपर उठा लेता है लेकिन गिरा आदमी ऊपर वाले को गिरा देता है। जिन्दगी का भला हमे ाा ऊपर उठने में है नीचे गिरने में नहीं। जो जिन्दगी में हमेशा ऊपर उठता गया है वह एक दिन सबसे ऊपर का स्थान मोक्ष को पाता है, गिरना नियति नहीं कल्याण होना नियति है। जिंदगी कई अनुभवों का, कई गुणों का कई उच्च विचारों का पुंज है। हम कितने अनुभवों को पूरा कर चुके हैं ये बात अभी हमें पता नहीं है। **जब तक जिन्दगी के सारे अनुभवों का साक्षात्कार नहीं होगा तब तक जिन्दगी की दौड़ थमेगी नहीं।**

जिन्दगी का जीता हुआ अनुभव हमारे अंदर से उद्घटित होगा, हमारी संवेदना से होगा, शास्त्रों के पठन से नहीं। शास्त्रों का पठन अनुभव को पाने के सूत्र हैं। सूत्र तब तक कीमतहीन होते हैं, जब तक उनका प्रयोग करके हल न निकला जाये जिंदगी के लिए चार लाईनें –

कहीं पर ज्ञान जलता है, कहीं अज्ञान छलता है।
ये मानव के विचारों के पहलुओं की विकलता है।
कहीं पाँवों तले गुल हैं, कहीं काँटों का है बिस्तर
हमारे पाँव का काँटा सिर्फ हमसे निकलता है।।

अपनी जिन्दगी को बनाने वाले और बिगाड़ने वाले सिर्फ हम ही हैं। माहौल का मिलना हमारी किस्मत है। जिन्दगी पाने के लिए हौसले, गम के नजारों में बुलंद हों तभी कामयाबी मुकम्मिल होगी । हमारी ज़िंदगी, कोई गैर–लाख मशक्कत करने पर भी नहीं बदल सकता है। किसी शायर ने लिखा है –

देख हिस्टरी इस बात का कामिल यकीं आया।
जिसे जीना नहीं आया उसे मरना नहीं आया।।

जीने के लिए समझ होना, जरूरी समझ पैदा करने के लिए अनुभव जरूरी, अनुभव और समझ की कोई उम्र नहीं होती। जो अनुभव 20 वर्ष के युवा ने कर लिया हो, वही अनुभव व ज्ञान 80 वर्ष के वृद्ध को न हो। उम्र शरीर की होती है, आत्मा और ज्ञान की उम्र नहीं होती। **जो जन्म के बाद से ही अपने जीवन में जीना नहीं सीख पाया वो अंत में सही ढंग से मरना भी नहीं सीख सकता है। जीना जितनी बड़ी कला है,** मरना उससे भी बड़ी कला है। जो जिंदगी भर तरीके से सही ढंग से जिया है, उसे मरना सहजता से उपलब्ध हो जायेगा। वे लोग धन्य हैं जो गम के माहौल में खुशियों का नजारा बना लेते हैं –

तुम्हें खुशी है पसंद तो हमें गम है पसंद ।
अब तुम्हीं बताओ किसका हौसला है बुलंद ?

जिंदगी जीने की तमन्ना उसी के दिल में होती है, जिसने हमेशा सम्मान से जीना सीखा है, जिसने हमेशा स्वाधीनता को ही प्रधानता दी है। जो अच्छे और बुरे से भी ऊपर, वस्तु का सार देख सकता हो, जिंदगी उसी को उपहार में उपलब्ध होती है। चार लाईनें –

कभी जीने की ख्वाहिश कर सभी को भूलकर यारो
मिलें गर शूल राहों में उन्हें तू फूल कर यारो।
न प्रतिकूलों में रोना हो न अनुकूलों में हो हँसना,
तुझे प्रतिकूल जो भी हो उसे अनुकूल कर यारो।।

जिन्दगी सब जीते हैं लेकिन हँसकर के जीना सबसे बड़ी कला है। रोकर जीने वालों को प्राप्त हुआ आनन्द भी खो जाता है।

कोई हँसकरके जलता है कोई जल जल के रोता है,
कोई अंधियार खोता है कहीं तम और होता है।
चिराग अपना, समझ अपनी, सभी कुछ है यहाँ अपना,
कोई हँसकर के पाता है कोई रो करके खोता है।।

ज़िंदगी वास्तव में एक संगीत की तरह होती है संगीत सभी को आनन्दकारी होता है जानवर भी संगीत में मंत्रमुध हो जाते हैं जब कोई एक गीत रिकॉर्ड किया जाता है तो सारे सितार, कांगो, कैसियो आदि कई वाद्य यन्त्र बजते हैं लेकिन सभी का स्वर गीत पर आधारित होता है सभी में से स्वर एक ही ध्वनित होता है ठीक वैसे ही हमारी ज़िंदगी है। हम चाहे भोजन करें, चाहे

व्यापार करें, चाहे पूजा करें, चाहे टी.वी. देखें, चाहे कुछ भी करें लेकिन हमारे सभी कार्य करने में ज़िंदगी का ही संगीत निकले हमारे जीवन के उत्थान का ही संगीत निकले वाद्य बहुत हैं लेकिन गीत एक ही है वैसे ही ज़िंदगी में कार्य कई हैं लेकिन सबका लक्ष्य ज़िंदगी में पूर्णता की उपलब्धि का ही है।

एक बार की बात है एक भिखारी शहर के चौराहे पर एक सैकड़ों वर्ष पुराने वृक्ष के नीचे बैठ कर भीख माँगता था। वहीं कुछ आ जाता था तो खा-पीकर सो जाता था। इसी तरह उसकी उम्र गुजर रही थी। वह धन व्यापार-महल आदि के स्वप्न देखता रहता था सोचता था मैं इतना गरीब क्यों बनाया गया ? ईश्वर से पूछना है मैने क्या गुनाह किया था ? एक दिन की बात है वह खा – पीकर सो गया रात 4 बजे उसे स्वप्न आया कि शहर के बाहर नदी के दक्षिण पुल की तरफ अन्तिम खम्बे के नीचे खजाना गढ़ा हुआ है। उसकी नींद खुली तो स्वप्न के मुताबिक उधर ही चल पड़ा। नदी के पास जाकर देखा कि पुल के दक्षिण का पिलर बहुत ही मजबूत है कैसे खजाना पाया जायेगा? लेकिन जिसे पाने की धुन सवार हो गई वह कुछ भी कर सकता है। वह फावड़ा, गेंती आदि लेकर रात में पहुँचा देखा तो पुल पर एक सिपाही पहरा दे रहा था। कैसे काम करता ? रात 4 बजे तक इन्तजार के बाद सिपाही जब दूसरी तरफ जाने लगा तो वह भिखारी अपना काम करने लगा और खुदाई करते करते अचानक सिपाही का ध्यान उधर चला गया। उसने आकरके उससे पूछा कि यहाँ खुदाई क्यों कर रहे हो ? इस पर भिखारी ने कहा कि मुझे तीन दिन पूर्व एक स्वप्न आया था कि इस खम्बे के नीचे खजाना गढ़ा हुआ है। सिपाही बोला- एक स्वप्न मुझे अभी अभी आया है कि शहर के चौराहे पर एक विशाल वृक्ष है उस वृक्ष के नीचे खजाना गढ़ा हुआ है। वह भिखारी वहीं जिन्दगी भर रहा था भिखारी तत्काल बोला- झूठ बोलता है। मैं जिन्दगी भर उसी वृक्ष के नीचे रहा हूँ मुझे आज तक स्वप्न नहीं आया सिपाही ने कहा चलो चलकर देख लेते हैं। दोनों मिलकर उस चौराहे पर गये पेड़ के नीचे वहीं पर खुदाई की जहाँ वह भिखारी सोता रहता था, बैठा रहता था। थोड़ी सी खुदाई करने के बाद खन्न की आवाज आने लगी सभी की निगाहें

वहीं टिक गईं देखा वहाँ खजाना निकल आया। भिखारी दहाड़ें मारकर रोने लगा तो लोगों ने कहा-तू रो क्यों रहा है तूझे तो हँसना चाहिए। भिखारी बोला- **जहाँ मैंने जिन्दगी भर भीख माँगी, दर दर की ठोकरें खाईं, खजाना वहीं था यह पहले मिल जाता तो सारी जिन्दगी आनन्द से गुजरती लेकिन अब तो मैं बूढ़ा हो गया हूँ अब क्या करूँ ?** निकल आया। भिखारी दहाड़ें मारकर रोने लगा तो

लोगों ने कहा–तू रो क्यों रहा है तूझे तो हँसना चाहिए। भिखारी बोला–

खजाना हमारे अन्दर, खजाने के मालिक हम, चाबी हमारे पास, हम जब चाहें उसको प्राप्त कर सकते हैं। जिन्दगी हमारे पास है और हम जिन्दगी के लिए भटक रहे हैं भिखारी की तरह –

जिसे मंजिल न दिख पाई उसे संसार सूझेगा,
जिसे नहिं राह मिल पाई वही संसार घूमेगा
जो खुद को भूलकरके जी रहे दुनियाँ में आकरके
न अपना पा सके वो घर समन्दर में हि डूबेगा।

अत: हम सभी को जिन्दगी खुशहाल बनाना है तो अपने जीवन में भगवान महावीर के अनुभव पैदा करना चाहिए, राम जैसी मर्यादा पैदा करना चाहिए, हनुमान जैसी भक्ति पैदा करना चाहिए और मीरा जैसी लगन पैदा करना चाहिए। जिन्दगी नजदीक है। न खुशी में फूलो न गम में दहाड़ें मारकर चिल्लाओ, दिल वही है जो सारे गम सह ले, गम न सह सके वो दिल नहीं चूहे का बिल है।

सभी आलम के सहले गम यहाँ सीना उसी का है।
हमारा आपका जीना, नहीं–जीना उसी का है।
भरे हों जख्म दिल में पर पिये आँखों से अश्कों को
निकलने दे नहीं आँसू, यहाँ पीना उसी का है।

ज़िंदगी गम के ख्यालों में रोने के लिए नहीं गम में फूलों सा खिलखिलाने के लिए है, गम में जो हँस सकते हैं उनके जीवन में कभी रोना नहीं है क्योंकि खुशी में भी हँसना है और आँसू यदि बहाना ही हैं तो जीवन को पाने के लिए हमने आज तक प्रयास नहीं किया इस पर बहाइये और पूरी शक्ति लगाकर प्रयास करिये मुझे उम्मीद है विश्वास भी है कि हमारे कदम लक्ष्य का मुकाम पाने में एक दिन जरूर सफलता हासिल करेंगे। तभी यह ज़िंदगी समझ में आ सकेगी कि ज़िंदगी आखिर क्या थी ? और हम क्या समझे।

जय जिनेन्द्र

आचार्य श्री द्वारा
रचित साहित्य की तालिका

1. सचित्र भक्तामर स्तोत्र –(सचित्र रंगीन पुस्तक)

शुद्ध भक्तामर स्तोत्र को सही ढंग से तोड़कर लिखा गया है जिसमें नई धुन पर आठ तरह का पद्यानुवाद है, ऋद्धि मंत्र व फल विवेचन भी है।

2. तन्मयता की बेला –

आज की नवीन पीढ़ी के लिए विधिपूर्वक आगमानुसार भगवान की पूजन करने का सही ढंग, जिसमें भक्तामर स्तोत्र, स्वप्न फल, सूतक पातक एवं नये ढंग से मधुरमय अर्घावली

3. भक्तामर स्तोत्र –

शुद्ध भक्तामर स्तोत्र को सही ढंग से तोड़कर लिखा गया है जिसमें नई धुन पर पाँच तरह का पद्यानुवाद है, ऋद्धि मंत्र व फल विवेचन भी है।

4. दैनिक कर्तव्य

श्रावक के करने योग्य सभी स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, सामायिक पाठादि, द्रव्य संग्रह, इष्टोपदेश, चौघडिया, सूतक पातक आदि

5. आस्था के स्वर –

108 नवीन भजन आचार्य श्री द्वारा रचित

6. समंदर की लहरें –

लगभग 100 भजन आचार्य श्री द्वारा रचित

7. अंतस् का पराग –

लगभग 80 भजन आचार्य श्री द्वारा रचित

8. Philosophy of Karma –कर्म विज्ञान –

कर्मो का विवेचन प्रश्नोत्तर में – आचार्य श्री द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद

9. बोलती कविताएँ–

आचार्य श्री द्वारा लगभग 190 स्व रचित कविताएँ साहित्यिक – धार्मिक एवं व्यंगात्मक

10. जमाने का सच–

आचार्यश्री द्वारा नये नये चिंतनों का अनूठा संकलन

11. हकीकत का पैगाम –

आचार्यश्री द्वारा मंथन का निचोड़ व तर्क के आधार पर नये – नये अनूठे विचारों का संगम

12. ज़िंदगी क्या है? –

आचार्य श्री का ज़िंदगी के बारे में महत्वपूर्ण तीन प्रवचनों का संकलन

13. सच क्या है? –

तेरा पंथ–बीस पंथ और विशाल सच का स्वरूप, मूढ व मूर्ख में, भूले व भोले में अंतर – सच्चा धर्म और झूठा पंथ का अहंकार क्या है ?

14. ख़जाने के मोती –

आचार्यश्री द्वारा रचित उर्दू में गज़लें लगभग 102 सभी तर्जों में रचित, शेर व मुक्तक

15. तासीर के मंजर –

आचार्यश्री द्वारा रचित उर्दू में गज़लें लगभग 102 सभी तर्जों में रचित, शेर व मुक्तक

16. What is Life –

आचार्यश्री द्वारा प्रवचन की पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद

17. What is truth -

आचार्यश्री द्वारा लिखित पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद

18. जानिये सम्यक् दीपावली –

सही तरीके से दीपावली मनाने की विधि

19. Moral Science for Children

Part I,II,III मुनि श्री द्वारा English Translation

20. English Quatation

आचार्यश्री द्वारा English में रचित सूक्तियों धार्मिक एवं व्यावहारिक

21. सामायिक पाठ –

संस्कृत/हिंदी पद्यानुवाद व प्रतिक्रमण

22. गा लो गुरु गुणगान –

आचार्यश्री द्वारा लिखित 4 पूजन व भजन

23. अपना भविष्य जानो (Know your Future)

आचार्यश्री द्वारा लिखित हिन्दी व English में

24. ऐसा क्यों ?

युवा पीढ़ी की नई शंकाओं के तर्क सहित अनूठे और सटीक उत्तर

25. होनी अनहोनी

जीवन है पानी की बूँद, जीवन जलता दिया यहाँ, गुरुवर का आशीष हमें, जीवन चलती साँस यहाँ एवं अंग्रेजी में भजन व सूक्तियाँ

26. स्वर्ग नरक

स्वर्ग–नरक क्या है विशेष प्रवचन

27. विराग सुमन – अप्राप्य

28. विराग वंदना – अप्राप्य

29. सच्चे ज्ञान की पहिचान –

आचार्यश्री द्वारा लिखित सच्चा ज्ञान क्या है ?

******

प्राप्ति स्थान

सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ
भिण्ड

श्री देवेन्द्र जैन
बड़ी बजरिया, बीना (सागर)
फोन – 07580–223344

सीपुर समता तीर्थ धाम
सीपुर
9828613614